ज्येष्ठ कृष्ण - 12 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 19 ■ अंक - 306 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- बेंगलूरु » मंगलवार » 04-06-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : news@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತ ರಾಷ್ಟ್ರಮತ | ಹಿಂದಿ ದಿನ ಪತ್ರಿಕೆ | बेंगलूरु और चेन्नई से एक साथ प्रकाशित

5 उम्मीद है, असल परिणाम एग्जिट पोल के बिल्कुल उलट होंगे : सोनिया गांधी

6 कितने एग्जेट पोल साबित होंगे एग्जिट पोल?

7 'हीरामंडी' का दूसरा सीजन लेकर आ रहे संजय लीला भंसाली

फर्स्ट टेक

नफरत भरा संदेश फैलाने के आरोप में एक व्यक्ति गिरफ्तार

मंगलुरु/भाषा। मंगलुरु पुलिस आयुक्तालय की साइबर आर्थिक और मादक पदार्थ अपराध पुलिस के अधिकारियों ने कुछ सोशल मीडिया समूहों पर कथित रूप से ''घृणा और हिंसा'' वाले बयान देने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आरोपी की पहचान उल्लाल निवासी सोजी अल्ताफ के रूप में की गई है। मंगलुरु के पुलिस आयुक्त अनुपम अग्रवाल ने यहां 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि मंगलुरु में उल्लाल का रहने वाला सोजी अल्ताफ व्हाट्सऐप ग्रुप के माध्यम से एक भड़काऊ संदेश प्रसारित कर रहा था।

इजरायल ने सीरिया के अलेप्पो शहर में मिसाइल हमले किये

दमिश्क/एजेन्सी। इजरायल ने उत्तरी सीरिया के शहर अलेप्पो के ग्रामीण इलाकों में रविवार की राज मिसाइल किये। स्थानीय मीडिया और कार्यकर्ताओं ने सोमवार को बताया कि इजरायल ने मिसाइल हमला रविवार देर रात उत्तर-पश्चिम में हय्यान शहर और अलेप्पो शहर के ग्रामीण इलाकों में कई जगहों पर किया। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स वॉर मॉनिटर ने भी अलेप्पो में लगातार जोरदार विस्फोटों की सूचना दी।

उत्तर कोरिया के साथ शांति समझौते को निलंबित करेंगे : दक्षिण कोरिया

सियोल/एपी। दक्षिण कोरिया ने कचरे से भरे गुब्बारे उड़ाने के मामले को लेकर उत्तर कोरिया को दंडित करने के लिए दोनों देशों के बीच हुए शांति समझौते को निलंबित करने की सोमवार को घोषणा की। हालांकि उत्तर कोरिया गुब्बारे उड़ाने की अपनी हरकत पर लगाम लगाने को कह चुका है। लोगों द्वारा दक्षिण कोरिया में हाल ही में पर्चे बांटे जाने के अभियान से नाराज उत्तर कोरिया ने बीते कई दिनों में पड़ोसी देश की ओर कचरे से भरे गुब्बारे उड़ाए थे। दक्षिण कोरिया ने रविवार को कहा कि उत्तर कोरिया की इस हरकत के जवाब में वह कड़ा कदम उठाएगा। उत्तर कोरिया हालांकि पहले ही सीमा पार गुब्बारे उड़ाए जाने को रोकने की घोषणा कर चुका है। सोमवार को, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने कहा कि परिषद ने वर्ष 2018 के अंतर-कोरियाई समझौते को निलंबित करने का फैसला किया है। इस समझौते का उद्देश्य दोनों कोरियाई देशों के बीच आपसी विश्वास बहाल होने तक सीमावर्ती शत्रुता को कम करना था।

04-06-2024 सूर्यास्त 6:43 बजे	05-06-2024 सूर्योदय 5:52 बजे

BSE	NSE
76,468.78 (+2,507.47)	23,263.90 (+733.20)

सोना	चांदी
7,458 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम	91,797 रु. प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

परिणाम समीक्षा

आप जिन्हें चिड़िया समझे,
वे निकल गए खूंखार बाज।
जो सबको नंगा करते थे,
उनकी ही उघड़ी आज लाज।
नेता बनने की जिन्हें चाह,
वे बाबाजी हो गए आज।
जो आए थे बाबा बनने,
वे नेता बनकर धरे ताज।।

लोकसभा चुनाव की मतगणना आज

■ राजग सत्ता की हैट्रिक लगाता है या फिर विपक्षी इंडि समूह सत्ता परिवर्तन करेगा!

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

■ **सबसे पहले सभी मतदान केन्द्रों पर डाक मतपत्रों की गिनती शुरू करायी जाएगी उसके आधे घंटे के बाद ईवीएम मशीनों की और अंत में पांच-पांच वीवीपैट की गणना की जाएगी।**

■ **आठरहवीं लोकसभा के चुनाव में कुल 543 निर्वाचन क्षेत्रों में 64.2 करोड़ मतदाताओं ने अपने मताधिकार को प्रयोग किया। जिनमें 31.2 प्रतिशत महिला मतदाता शामिल थी।**

नई दिल्ली/वार्ता। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए सात चरणों में हुए मतदान की मतगणना मंगलवार सुबह आठ बजे से देशभर में विभिन्न मतगणना केन्द्रों पर भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शुरू होगी और अंतिम वोट गिने जाने तक निरंतर जारी रहेगी।

मतगणना के साथ ही विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक कवायद पूरी होगी। करीब 80 दिन तक चले लोकतंत्र के इस महोत्सव में सब की निगाहें कल की मतगणना पर टिकी है, जो यह तय करेगा की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सत्ता की हैट्रिक लगाता है या फिर विपक्षी इंडि समूह सत्ता परिवर्तन के अपने प्रयास में सफल होता है।

मतगणना के लिए सभी राज्यों के जिला मुख्यालयों पर मतगणना केन्द्र स्थापित किये गये हैं। सभी मतगणना केन्द्रों पर त्रिस्तरीय सुरक्षा की चाक चौबंद व्यवस्था की गयी है। सातों चरणों के मतदान की इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनें (ईवीएम) स्ट्रॉग रूम से सुबह तक कड़े पहरे में मतगणना टेबल तक पहुंचा दी जाएंगी।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार ने आज राजधानी में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि स्थापित व्यवस्था के अनुसार सबसे पहले सभी मतदान केन्द्रों पर डाक मतपत्रों की गिनती शुरू करायी जाएगी उसके आधे घंटे के बाद ईवीएम मशीनों की और अंत में पांच-पांच वीवीपैट की गणना की जाएगी। उन्होंने कहा कि यह मतगणना का काम आखिरी वोट की गिनती तक निरंतर रूप से जारी रहेगा। उन्होंने मतगणना में किसी भी प्रकार की गडबड़ी की आशंका को खारिज करते हुए कहा कि चुनाव उम्मीदवारों के मतगणना एजेंटों को नियमानुसार मतगणना पर निगाह रखने की पूरी छूट होगी। उन्होंने कहा कि प्रणाली में किसी भी प्रकार की जांच बाद में भी करायी जा सकती है। उन्होंने विपक्ष द्वारा मतगणना में धांधली की आशंका प्रकट किये जाने को पूरी तरह से खारिज किया।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने चेतावनी दी कि मतदान केन्द्रों पर उपद्रव करने की किसी भी कोशिश को कड़ाई से निपटा जाएगा। आठरहवीं लोकसभा के चुनाव में कुल 543 निर्वाचन क्षेत्रों में 64.2 करोड़ मतदाताओं ने अपने मताधिकार को प्रयोग किया गया जिनमें 31.2 प्रतिशत महिला मतदाता शामिल थी।

सूरत की लोकसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया है।

लोकसभा चुनाव के साथ अरुणाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश,

शक का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं : राजीव कुमार

नई दिल्ली/वार्ता। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने लोकसभा चुनाव प्रक्रिया को लेकर विपक्षी दलों द्वारा लगाये गये आरोपों को बेबुनियाद और आधारहीन बताया तथा इसे केवल शक एवं संदेह करार देते हुए शायराना अंदाज में कहा कि शक का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं है।

लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद और मतगणना से एक दिन पहले सोमवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कुमार ने विपक्षी दलों के सभी आरोपों से जुड़े सवालों का शायराना अंदाज में विस्तार से जवाब दिया। उन्होंने कहा , आजकल इल्जामातों का दौर बुलंद है , तल्खियों का बाजार गर्म है , पंच को पहले ही घेर लो यानी पेशबंदी। मंजूर है इल्जाम लगाओ हम पर , शर्त इतनी कि साथ में सबूत भी हो। गोया कोई तो बात है कि हर बार मुद्दई वही , कचहरी वही गवाह कोई नहीं। शक का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं। उन्होंने कहा कि विपक्ष जिस तरह से घेराबंदी कर रहा है उसका मतलब है , अंपायर को ही पकड़ लो जिससे कि वो बोल ही नहीं पाये। फार्म 17 सी को बदलने के आरोपों पर विपक्ष से सबूत मांगते हुए उन्होंने कहा , कैसे हमने 17 सी बदल दिया , डाटा बदल दिया, कहीं किसी एक जगह का नाम तो बताओ भाई। उन्होंने कहा , एक और अजीब बात है जो उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं , जो काउंटर पर बैठे हुए हैं जो फार्म 17 सी ले रहे हैं , वहां से कोई शिकायत नहीं है । पता नहीं यह शिकायत कहां से है। कुछ कहने को आ रहा है लेकिन मैं बोल नहीं रहा हूं।

कविता की न्यायिक हिरासत अवधि तीन जुलाई तक बढ़ी

नई दिल्ली/एजेन्सी। राष्ट्रीय राजधानी की राउज एवेन्यू अदालत ने धनशोधन मामले में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) की नेता कल्वाकुंतला कविता की न्यायिक हिरासत अवधि तीन जुलाई तक बढ़ा दी है। विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा ने सुश्री कविता को राउज एवेन्यू अदालत में पेश किए जाने के बाद हिरासत बढ़ाने का आदेश दिया। उनकी हिरासत अवधि में विस्तार 29 मई को उनके खिलाफ दायर आरोप पत्र के मूल्यांकन के बाद अदालत द्वारा प्रोडक्शन वारंट को मान्यता दिए जाने के मद्देनजर किया गया है। अदालत ने तीन सह-अभियुक्तों प्रिंस, दामोदर और अरविंद सिंह को भी जमानत दे दी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा जांच के दौरान गिरफ्तार किए बिना ही तीनों पर आरोप पत्र दायर किया गया था। सुश्री कविता को ईडी ने 15 मार्च को तेलंगाना के बंजारा हिल्स स्थित उनके आवास से गिरफ्तार किया था। वह वर्तमान में एमएलसी हैं और तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव की बेटी हैं।

खरगे ने अधिकारियों को लिखा पत्र, दबाव में काम नहीं करने की अपील

नई दिल्ली/एजेन्सी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अधिकारियों को पत्र लिखकर संविधान के तहत अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की अपील करते हुए कहा कि वे किसी के दबाव में आकर कोई भी काम नहीं करें।

खरगे ने कहा कांग्रेस समस्त ब्यूरोक्रेसी से आग्रह करती है कि वे संविधान का पालन करें, अपने कर्तव्यों का पालन करें और बिना किसी भय, पक्षपात या द्वेष के राष्ट्र की सेवा करें। किसी से डरें नहीं। किसी असंवैधानिक तरीके के आगे न झुकें। किसी से न डरें और मतगणना दिवस पर योग्यता के आधार पर कर्तव्यों का निर्वहन करें। उन्होंने कहा हम भावी पीढ़ियों के लिए आधुनिक भारत के निर्माताओं द्वारा रचित जीवंत लोकतंत्र और दीर्घकालिक संविधान के ऋणी हैं। चुनाव आयोग, केंद्रीय सशस्त्र बलों, विभिन्न राज्यों की पुलिस, सिविल सेवकों, जिला कलेक्टरों, स्वयंसेवकों और आप में से हर एक को बधाई देना चाहता हूँ जो देश मे चुनाव सम्पन्न कराने के इस विशाल और ऐतिहासिक कार्य के क्रियान्वयन में शामिल थे।

खरगे ने सिविल सेवकों के कर्तव्यों को लेकर सरदार वल्लभभाई पटेल को उद्धृत करते हुए कहा हमारे प्रेरणास्रोत और भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने सिविल सेवकों को 'भारत का स्टील फ्रेम' कहा था। भारत के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि यह कांग्रेस ही है जिसने संविधान के आधार पर कई संस्थाओं की स्थापना की, उनकी ठोस नींव रखी और उनकी स्वतंत्रता के लिए तंत्र तैयार किए।

पुलवामा में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में

लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर समेत दो आतंकवादी ढेर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीनगर/भाषा। जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में सोमवार को सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा के एक स्वयंभू कमांडर समेत दो आतंकवादी मारे गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि आतंकवाद रोधी अभियान रविवार रात पौने 12 बजे शुरू हुआ जब आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना के बाद जम्मू-कश्मीर पुलिस ने सेना और अर्धसैनिक बलों के साथ मिलकर पुलवामा जिले के निहामा इलाके में एक घर की घेराबंदी की। उन्होंने बताया कि जब आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया तो दो आतंकवादियों के साथ सोमवार सुबह सात बजे मुठभेड़ शुरू हो गई जिनकी पहचान रियाज डार उर्फ 'सथर' और रईस डार के रूप में हुई। उन्होंने बताया कि अभियान का निरीक्षण पुलिस उपमहानिरीक्षक (दक्षिण कश्मीर) अल्ताफ खान ने किया और इस दौरान यह सुनिश्चित करने के लिए एहतियात बरता गया कि किसी भी आम नागरिक को कोई नुकसान न पहुंचे या उसकी जान न जाए।

पुलिस के अनुसार, दोपहर में गोलीबारी तेज हो गई जिसके बाद जिस घर में दोनों आतंकवादी छुपे हुए थे, उसमें आग लग गई। दोनों आतंकवादियों के शव बरामद होने के बाद शाम चार बजे अभियान खत्म कर दिया गया।

ताज एक्सप्रेस के तीन डिब्बों में लगी आग, कोई हताहत नहीं

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली से झांसी जा रही ताज एक्सप्रेस के तीन डिब्बों में दक्षिण-पूर्व दिल्ली के सरिता विहार इलाके में सोमवार को आग लग गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है और यात्री समय रहते प्रभावित डिब्बों से बाहर निकलने में सफल रहे। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारणों का तत्काल पता नहीं चला है। पुलिस ने बताया कि ट्रेन अपराह्न तीन बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से रवाना हुयी और आग लगने की घटना ओखला एवं तुगलकाबाद रेलवे स्टेशन के बीच हुयी।

दिल्ली दमकल सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया, ''हमें अपराह्न चार बजकर 24 मिनट पर ताज एक्सप्रेस के तीन डिब्बों में आग लगने की सूचना मिली और आग बुझाने के लिए दमकल के आठ वाहनों को मौके पर भेजा गया है तथा आग पर शाम पांच बजकर 43 मिनट पर काबू पा लिया गया।'' पुलिस ने बताया कि डी3 और डी4 डिब्बे पूरी तरह जल गए हैं जबकि डी2 को आंशिक नुकसान पहुंचा है। पुलिस के मुताबिक क्षतिग्रस्त तीनों डिब्बे सामान्य श्रेणी के चेयरकार थे।

दमकलकर्मी जब आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे थे तब तेज लपटें डिब्बों से बाहर निकलने लगी और चारों तरफ काला धुंआ फैला हुआ था।

अपनी आपबीती बताते हुए कुछ यात्रियों ने कहा कि उन्होंने लोगों को आग लगने पर चिल्लाते हुए सुना और उन्हें सुरक्षित स्थान पर भागना पड़ा।

नीरव मोदी, विजय माल्या, चोकसी भाग गए क्योंकि एजेंसियों ने सही समय पर गिरफ्तार नहीं किया : अदालत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। करोड़ों डॉलर के घोटालों में शामिल नीरव मोदी, मेहुल चोकसी और विजय माल्या जैसे उद्यमी इसलिए देश छोड़कर जाने में सफल रहे क्योंकि जांच एजेंसियां उन्हें सही समय पर गिरफ्तार नहीं कर पाईं। यहां एक विशेष अदालत ने हाल में यह बात कही।

विशेष न्यायाधीश एम जी देशपांडे ने धनशोधन रोकथाम कानून (पीएमएलए) के तहत निरुद्ध एक आरोपी की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की जिसने अपनी जमानत शर्तों में बदलाव का अनुरोध किया था। अदालत ने धनशोधन मामले में आरोपी व्योमेश शाह की इस याचिका को 29 मई को विचारार्थ स्वीकार कर लिया था जिसमें उसने अनुरोध किया था कि विदेश यात्रा के लिए अदालत की पूर्व अनुमति लेने की जमानत की शर्त को हटाया जाए। विस्तृत आदेश हाल में उपलब्ध कराया गया।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दलील दी थी कि शाह की अर्जी को स्वीकार करने से नीरव मोदी, विजय माल्या और मेहुल चोकसी के मामलों जैसी परिस्थितियां पैदा होंगी। इस पर न्यायाधीश ने कहा, ''मैंने सोच-समझकर इस दलील पर विचार किया और मुझे यह बात सामने रखना जरूरी लगता है कि ये सभी लोग, सही समय पर इन्हें गिरफ्तार नहीं कर पाने में संबंधित जांच एजेंसियों की नाकामी की वजह से भागे।'' उन्होंने कहा कि इसके विपरीत शाह समन पर अदालत में पेश हुए, जमानत हासिल की और उन्होंने विदेश यात्रा के लिए कई बार आवेदन किया।

अदालत ने कहा कि शाह के मामले की तुलना नीरव मोदी, विजय माल्या और मेहुल चोकसी आदि के मामलों से नहीं की जा सकती।

हीरा कारोबारी नीरव मोदी और उसका मामा मेहुल चोकसी करोड़ों रुपये के पीएनबी घोटाले में मुख्य आरोपी हैं। नीरव इस समय ब्रिटेन की एक जेल में सजा काट रहा है, वहीं चोकसी एंटीगुआ में रहता है।

देश को पुरानी सोच, मान्यताओं, नकारात्मकता से निकालना है : मोदी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

■ **नमो ऐप पर एक ब्लॉग लिख कर कन्याकुमारी के अनुभवों को लिपिबद्ध रूप में मोदी ने पेश किया।**

नई दिल्ली/वार्ता। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कन्याकुमारी में अपनी 45 घंटे की साधना के अनुभव साझा करते हुए देशवासियों का आह्वान किया है कि एक राष्ट्र के रूप में पुरानी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन करके हमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सोचते हुए अपने समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से बाहर निकालकर और नकारात्मकता से मुक्ति दिला करदेश को सफलता की सिद्धि तक पहुंचाना है।

मोदी ने आज नमो ऐप पर एक ब्लॉग लिख कर कन्याकुमारी के अनुभवों को लिपिबद्ध रूप में पेश किया। इन शब्दों को उन्होंने एक जून को कन्याकुमारी से दिल्ली लौटते समय विमान में शाम सवा चार बजे से सात बजे के बीच लिखा था जिसमें उन्होंने अगले 25 वर्षों को केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने और विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने का आह्वान किया है। उन्होंने यह भी कहा कि 45 घंटों की साधना के दौरान उनके मन में भारत माता के चरणों में बैठ कर विरक्ति के भावों के बीच भारत के उज्ज्वल भविष्य के लक्ष्यों के लिए विचार उमड़ रहे थे जिन्हें उगते हुए सूर्य ने नई ऊंचाई और सागर की विशालता ने विस्तार दिया तथा क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता का निरंतर एहसास कराया। इस दौरान दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो गये।

प्रधानमंत्री ने अपने लेख की शुरुआत करते हुए कहा, लोकतन्त्र की जननी में लोकतन्त्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव आज 1 जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

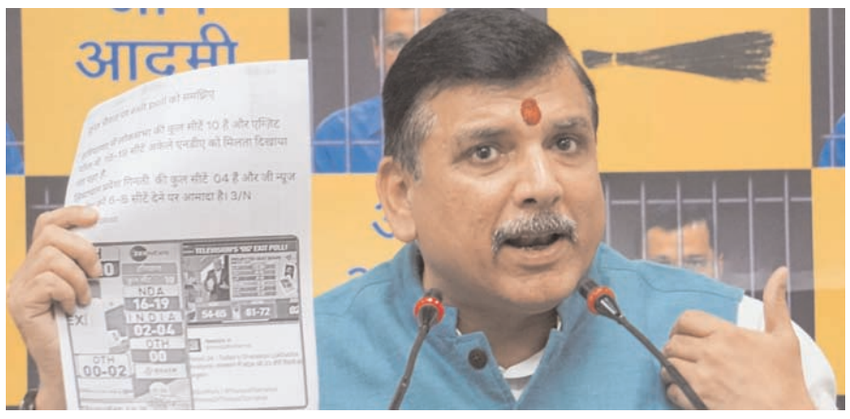

एग्जिट पोल पर प्रतिबंध लगाया जाए : आप नेता संजय सिंह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने देश में एग्जिट पोल पर पूरी तरह से रोक लगाने की मांग करते हुए सोमवार को दावा किया कि यह कई बार गलत साबित हुआ है।

टेलीविजन चैनलों पर शनिवार को प्रसारित कई एग्जिट पोल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लगातार तीसरी बार सत्ता में बने रहने का पूर्वानुमान लगाया गया है। साथ ही लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को भारी बहुमत मिलने की संभावना जताई गई है।

सिंह ने संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''एग्जिट पोल को देश में पूरी तरह से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए क्योंकि वे एक बार नहीं बल्कि कई बार गलत साबित हुए हैं। यह मतगणना से पहले देश के लोगों, प्रशासनिक प्रणाली और निर्वाचन आयोग को प्रभावित करने का गलत तरीका है।'' उन्होंने दावा किया कि चार जून को मतगणना के बाद विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' ('इंडिया') को 295 सीट मिलेंगी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को कहा कि भाजपा नीत राजग के लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का पूर्वानुमान जताने वाले सभी एग्जिट पोल 'फर्जी' हैं। केजरीवाल ने कहा था, ''कल, एग्जिट पोल के नतीजे सामने आये थे और मैं लिख कर दे सकता हूं कि वे फर्जी हैं। राजस्थान में केवल 25 संसदीय सीट हैं लेकिन एग्जिट पोल में उन्हें 33 सीट दी गई है। क्या कारण है कि उन्होंने फर्जी एग्जिट पोल के नतीजे जारी किए हैं?''

क्या इंदौर 'सबसे बड़ी जीत' और 'नोटा' का नया रिकॉर्ड बनाएगा, ईवीएम देगी जवाब

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

इंदौर (मध्यप्रदेश)/भाषा। लोकसभा चुनाव की मंगलवार को होने वाली मतगणना से पहले, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने इंदौर में 10 लाख से ज्यादा मतों के अंतर से अब तक की सबसे बड़ी जीत का भरोसा जताया है। उधर, कांग्रेस का दावा है कि इंदौर में ''नोटा'' कम से कम दो लाख वोट हासिल करके नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड कायम करेगा।

इंदौर में कांग्रेस के घोषित प्रत्याशी अक्षय कांति बम ने पार्टी को तगड़ा झटका देते हुए नामांकन वापसी की आखिरी तारीख 29 अप्रैल को अपना पर्चा वापस ले लिया और वह इसके तुरंत बाद भाजपा में शामिल हो गए थे। नतीजतन इस सीट के 72 साल के इतिहास में कांग्रेस पहली बार चुनावी दौड़ से बाहर हो गई।

कांग्रेस ने स्थानीय मतदाताओं से अपील की कि वे ईवीएम पर ''नोटा'' (उपरोक्त में से कोई नहीं) का बटन दबाकर भाजपा को सबक सिखाएं। जिला निर्वाचन कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि इंदौर में 13 मई को हुए मतदान में कुल 25.27 लाख मतदाताओं में से 61.75 प्रतिशत लोगों ने वोट डाला। वैसे तो इस सीट पर कुल 14 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा, लेकिन राजनीति के स्थानीय समीकरणों के कारण मुख्य जंग इंदौर के निवर्तमान सांसद और मौजूदा भाजपा उम्मीदवार शंकर लालवानी और कांग्रेस समर्थित ''नोटा'' के बीच रही। लालवानी ने कहा,''हमें पूरा भरोसा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हम इंदौर में 10 लाख से ज्यादा मतों के अंतर से अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज करेंगे।'' 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान लालवानी ने अपने नजदीकी प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस प्रत्याशी पंकज संघवी को 5.48 लाख वोट से हराया था। पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान इंदौर में 69.31 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया था और 5,045 मतदाताओं ने ''नोटा'' का विकल्प चुना था।

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में गुजरात के नवसारी से भाजपा उम्मीदवार सीआर पाटिल ने कांग्रेस प्रत्याशी धर्मेश भाई भीम भाई पटेल को करीब 6.90 लाख वोट से हराया था। जीत का यह अंतर पिछले चुनाव में देश की सभी 543 लोकसभा सीट में सबसे ज्यादा था। इससे पहले, भाजपा के दिवंगत नेता गोपीनाथ मुंडे की बेटी प्रीतम मुंडे अक्टूबर 2014 में महाराष्ट्र की बीड सीट पर हुए उपचुनाव में 6.96 लाख वोट के रिकॉर्ड अंतर से जीतकर लोकसभा पहुंची थीं।

पिछले दशक में हवाई यात्रा की वास्तविक लागत में 34 प्रतिशत की कमी आई : आईएटीए प्रमुख

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

दुबई/भाषा। आईएटीए के महानिदेशक विली वॉल्श ने सोमवार को कहा कि पिछले दशक में हवाई यात्रा की वास्तविक लागत में 34% की गिरावट आई है। प्रति यात्री एयरलाइन को मिलने वाला लाभ करीब 6.14 अमेरिकी डॉलर है।

अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) 330 से अधिक एयरलाइन का एक वैश्विक समूह है। आईएटीए की यहां 80वीं वार्षिक आम बैठक (एजीएम) को संबोधित करते हुए वॉल्श ने कहा कि उड़ान अब भी पैसे के हिसाब से अच्छी स्थिति में है। उन्होंने कहा, '' हमने हाल ही में 15 बाजार में 6,500 यात्रियों के बीच सर्वेक्षण कराया जिनमें से 77 प्रतिशत ने यही बात कही। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि पिछले दशक में हवाई यात्रा की वास्तविक लागत में 34 प्रतिशत की गिरावट आई है।''

वॉल्श ने बताया कि प्रति यात्री एयरलाइन को मिलने वाला लाभ करीब 6.14 डॉलर रहा। वार्षिक आम बैठक दुबई के एक प्रमुख पांच सितारा होटल में हो रही है। वैश्विक स्तर पर 2024 तक एयरलाइन कंपनियों द्वारा करीब 1,000 अरब अमेरिकी डॉलर का राजस्व दर्ज करने की उम्मीद है। टिकाऊ विमानन ईंधन (एसएएफ) के उत्पादन को बढ़ाने की जरूरत पर बल देते हुए वॉल्श ने कहा कि 2050 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करना मुमकिन है....वैकल्पिक नहीं। इस वर्ष एसएएफ उत्पादन विमानन क्षेत्र की कुल ईंधन आवश्यकताओं के 0.5 प्रतिशत से थोड़ा अधिक तक पहुंचने का अनुमान है।

हैदराबाद में दीवार गिरने से दो बच्चियों की मौत, तीन घायल

हैदराबाद/भाषा। हैदराबाद में एक घर की चहारदीवारी गिरने से दो बच्चियों की मौत हो गई और तीन अन्य बच्चे घायल हो गए। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी।

मैलारदेवपल्ली थाने के एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना सुबह करीब दस बजे हुई जब बच्चे घर के पास खेल रहे थे। उन्होंने कहा कि हादसे में दो बच्चियों की मौत हो गई, जिनमें एक की उम्र तीन वर्ष और दूसरी की उम्र आठ वर्ष थी। वहीं तीन अन्य बच्चे घायल हो गए। उन्होंने बताया कि घायलों को सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने बताया कि हादसे का शिकार हुए पीड़ित बिहार के प्रवासी मजदूरों के बच्चे थे। अधिकारी ने बताया कि कल रात शहर में हुई बारिश के बाद पुरानी दीवार ढह गई।

उन्होंने बताया कि नगर निगम के अधिकारी घटना की जांच कर रहे हैं। शोकाकुल परिवार के एक सदस्य ने पत्रकारों को बताया कि घर के पास खेलते समय बच्चों के ऊपर दीवार गिर गई, जिसमें दो बच्चियों की मौत हो गई। परिवार के एक अन्य सदस्य ने बताया कि वे चार साल से इस घर में रह रहे हैं।

महाराष्ट्र सरकार की सूखे से निपटने की कोशिश नाकाफी, हम संघर्ष शुरू करेंगे : पवार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पुणे/भाषा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने सोमवार को दावा किया कि महाराष्ट्र सरकार की सूखे की स्थिति से निपटने की कोशिश अपर्याप्त है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर जरूरी कदम नहीं उठाए गए तो 'संघर्ष' शुरू किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को लिखे पत्र में पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री ने सूखे की गंभीरता को रेखांकित करते हुए कहा कि बांधों में जलस्तर नीचे चला गया है और राज्य के कई इलाकों में पानी की भारी कमी है।

पवार ने पत्र में कहा, ''छत्रपति संभाजीनगर में 24 मई को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मैंने राज्य में सूखा जैसी स्थिति से निपटने के लिए सरकार के साथ सहयोग करने की बात की थी। आपने (मुख्यमंत्री) भी मराठवाड़ा इलाके में सूखे की स्थिति की समीक्षा की लेकिन जनप्रतिनिधि और मंत्री समीक्षा बैठक में नदारद थे।'' उन्होंने दावा किया कि राज्य सरकार सूखे की स्थिति से निपटने के लिए पूरी कोशिश नहीं कर रही है। गत दस दिन में सूखे की स्थिति और विकराल हुई है व बांधों में जलस्तर तेजी से कम होने से कई इलाकों में गंभीर जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। उन्होंने कहा, ''टैंकर की संख्या 1,100 से ऊपर हो गई है। पानी तथा चारे के कमी की वजह से मवेशियों के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है।'' पवार ने आरोप लगाया कि जल संकट की वजह से बागवानी के लिए गंभीर स्थिति उत्पन्न हो गई लेकिन राज्य सरकार ने उचित कदम नहीं उठाया है।

विपक्ष ने डाक मतपत्रों की पहले गिनती की घोषणा पर खुशी जताई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। विपक्ष ने मतगणना के दौरान पहले डाक मत पत्रों की गिनती करने की निर्वाचन आयोग की घोषणा पर खुशी जताते हुए सोमवार को कहा कि यह लोकतंत्र की भावना को बढ़ावा देने का भागीदारीपूर्ण तरीका है।

विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' ('इंडिया') के नेताओं ने रविवार को निर्वाचन आयोग से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि चार जून को 'इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन' (ईवीएम) के नतीजों से पहले डाक मत पत्रों की गिनती कर उनके परिणाम घोषित किये जाएं।

विपक्षी गठबंधन की तरफ से आयोग के समक्ष पक्ष रखने वाले कांग्रेस प्रवक्ता एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने सोमवार को एक बयान में कहा, '' मुझे उस बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल की ओर से बात करने पर खुशी और गर्व है जो कल निर्वाचन आयोग में गया था। हम रविवार को तुरंत समय देने और धैर्यपूर्वक हमारी बात सुनने के लिए निर्वाचन आयोग के भी आभारी हैं।'' उन्होंने कहा, '' सबसे ज्यादा खुशी की बात यह है कि लोकतंत्र के एक बहुत ही ज्वलंत मुद्दे– पहले डाक मतपत्रों की गिनती, पर आयोग द्वारा विनम्रतापूर्वक और तुरंत सहमति व्यक्त की गई है और कल इसे लागू किया जाएगा। ''

सिंघवी का कहना है कि यह लोकतंत्र की भावना को बढ़ावा देने का भागीदारीपूर्ण तरीका है, जो दीर्घकालिक रूप से सबसे अच्छा काम करता है।

दो हजार के 97.82% नोट वापस आये, 7,755 करोड़ रुपये मूल्य के नोट अब भी लोगों के पास

मुंबई/भाषा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सोमवार को कहा कि दो हजार रुपये मूल्य के 97.82 प्रतिशत नोट बैंकों में वापस आ गये हैं। चलन से हटाये गये केवल 7,755 करोड़ रुपये मूल्य के नोट अभी लोगों के पास हैं। आरबीआई ने 19 मई, 2023 को 2000 रुपये मूल्य के बैंक नोट को चलन से वापस लेने की घोषणा की थी।

चलन में 2000 रुपये मूल्य के बैंक नोट का कुल मूल्य 19 मई, 2023 को कारोबार की समाप्ति पर 3.56 लाख करोड़ रुपये था। यह 31 मई, 2024 को कारोबार की समाप्ति पर घटकर 7,755 करोड़ रुपये रह गया। केंद्रीय बैंक ने बयान में कहा, ''इस प्रकार, 19 मई, 2023 तक चलन में 2000 रुपये के 97.82 प्रतिशत बैंक नोट बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गये हैं।'' सात अक्टूबर, 2023 तक 2000 रुपये के बैंक नोट को जमा करने और/या बदलने की सुविधा देश की सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध थी। उन्नीस मई, 2023 से 2000 रुपये के बैंक नोट को बदलने की सुविधा रिजर्व बैंक के 19 निर्गम कार्यालयों में उपलब्ध है। आरबीआई के निर्गम कार्यालय नौ अक्टूबर, 2023 से व्यक्तियों और संस्थाओं से उनके बैंक खातों में जमा करने के लिए भी 2000 रुपये के नोट स्वीकार कर रहे हैं। इसके अलावा, लोग अपने बैंक खातों में जमा करने के लिए देश के किसी भी डाकघर से आरबीआई के किसी भी निर्गम कार्यालय में भारतीय डाक के माध्यम से 2000 रुपये के बैंक नोट भेज रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में 24 चमगादड़ मृत पाए गए, भीषण गर्मी से मौत की आशंका

कोरबा/भाषा। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में कम से कम 24 चमगादड़ मृत पाए गए। वन अधिकारियों ने आशंका जताई है कि चमगादड़ों की मौत अधिक गर्मी के कारण हुई है। अधिकारियों ने बताया कि मौत के कारणों का पता लगाने के लिए चमगादड़ों के शव के नमूने जांच के लिए भेजे गए हैं।

वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि पाली वन क्षेत्र के परसदा गांव में रविवार को एक तालाब के करीब चमगादड़ों के शव मिलने की सूचना मिली थी।

उन्होंने बताया कि सूचना मिलने के बाद पशु चिकित्सकों के एक दल को वनकर्मियों के साथ मौके पर भेजा गया। अधिकारियों ने कहा, ''प्रथम दृष्टया ऐसा लगता है कि चमगादड़ों की मौत 'हीट स्ट्रोक' से हुई है, लेकिन मौत के कारणों के बारे में सही जानकारी पोस्टमार्टम के बाद ही मिल सकेगी।'' विभाग के अधिकारियों ने बताया कि बताया कि विभाग मामले की जांच कर रहा है।

अडाणी की वित्तीय क्षेत्र में दस्तक, आईसीआईसीआई बैंक के साथ मिलकर पेश किया क्रेडिट कार्ड

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। विभिन्न कारोबार क्षेत्रों से जुड़े अडाणी समूह ने वित्तीय क्षेत्र में भी कदम रख दिया है। समूह ने सोमवार को आईसीआईसीआई बैंक के साथ मिलकर 'को-ब्रांडेड' क्रेडिट कार्ड जारी करने की घोषणा की।

समूह की इकाई अडाणी वन और आईसीआईसीआई बैंक ने वीजा के साथ मिलकर हवाई अड्डे से जुड़े लाभों के साथ देश का पहला को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड पेश किया है। अडाणी वन एक ऐप है जो उपयोगकर्ताओं को टिकट बुक करने, उड़ान की स्थिति की जांच करने, लाउंज तक पहुंचने, शुल्क-मुक्त उत्पादों की खरीदारी करने, कैब लेने और पार्किंग का लाभ उठाने आदि में मदद करता है। कंपनी ने कहा, ''कार्ड में कई लाभ दिये गये हैं। इसे कार्डधारकों के उनके हवाई अड्डे तथा यात्रा के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए तैयार किया गया है। यह अडाणी वन ऐप जैसे अडाणी समूह के उपभोक्ता परिवेश से जुड़ी इकाइयों में खर्च पर 7% तक 'रिवॉर्ड पॉइंट' देता है। अडाणी वन ऐप के जरिये उड़ान, होटल, ट्रेन, बस और कैब, अडाणी इलेक्ट्रिसिटी बिल भुगतान आदि सेवाएं ली जा सकती हैं।'' समूह ने दिसंबर, 2022 में, कंपनी की डिजिटल पहल को बढ़ाते हुए अडाणी वन ऐप शुरू किया। कार्ड उपयोगकर्ताओं को शुल्क मुक्त दुकानों पर खरीदारी और हवाई अड्डों पर खाने और पेय पदार्थों से जुड़े खर्चों पर छूट जैसे लाभ भी मिलते हैं।

हैदराबाद में दर्ज प्राथमिकी से अमित शाह और जी किशन रेड्डी का नाम हटाया गया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हैदराबाद/भाषा। हैदराबाद पुलिस ने पिछले महीने चुनाव प्रचार में कथित तौर पर बच्चों के इस्तेमाल को लेकर दर्ज प्राथमिकी से गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की तेलंगाना इकाई के अध्यक्ष जी.किशन रेड्डी के नाम को हटा दिया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के उपाध्यक्ष जी.निरंजन ने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) को शिकायत की थी कि एक मई को भाजपा की लालदरवाजा से सुधा टॉकीज तक निकाली गई रैली में शाह के साथ मंच पर कथित तौर पर कुछ बच्चे मौजूद थे। तेलंगाना के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने इस शिकायत को तथ्यात्मक रिपोर्ट के लिए शहर की पुलिस को भेज दिया था, जिसके बाद शाह, रेड्डी हैदराबाद लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार के.माधवी लता, विधायक टी राजा सिंह और पार्टी नेता टी.यमन सिंह के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि जांच में पाया गया कि अमित शाह और जी किशन रेड्डी की पूरे प्रकरण में कोई भूमिका नहीं थी। उन्होंने बताया कि मामले में पिछले सप्ताह स्थानीय अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया गया। पुलिस द्वारा शिकायतकर्ता को भेजे गए नोटिस में कहा गया, '' केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और केंद्रीय मंत्री किशन रेड्डी की संलिप्तता साबित नहीं हुई है। इसलिए दोनों के नाम इस मामले से हटाए गए और आरोप पत्र दाखिल कर दिया गया है।'' अधिकारी ने बताया कि तीन अन्य के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा-188 (सरकारी अधिकारी के आदेश की अवहेलना) के तहत दर्ज मामला जारी रहेगा।

एनआईए ने आईएसआईएस से जुड़े 17 लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने सोमवार को प्रतिबंधित वैश्विक आतंकवादी संगठन आईएसआईएस से जुड़े 17 लोगों के खिलाफ युवाओं को कट्टरपंथी बनाने की साजिश में शामिल होने के संबंध में आरोपपत्र दाखिल किया। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। बयान के मुताबिक, एनआईए ने मूल रूप से मार्च 2023 में तीन लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया था और सोमवार को दिल्ली की पटियाला हाउस अदालत के समक्ष 17 अन्य के खिलाफ पूरक आरोपपत्र दाखिल किया। इसमें कहा गया कि इन 17 आरोपियों में से 15 महाराष्ट्र से जबकि एक-एक उत्तराखंड और हरियाणा से है।

एनआईए द्वारा जारी बयान के मुताबिक, इस मामले में कुल 20 आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया जा चुका है, जिसमें विदेश में बैठे आकाओं के साथ आरोपियों के संबंधों का खुलासा हुआ है। आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता, गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, शस्त्र अधिनियम और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत आरोपपत्र दाखिल किया गया है। बयान में कहा गया, ''आरोपी आईएसआईएस के षड्यंत्र में शामिल पाए गए, जिसमें भर्ती, प्रशिक्षण और भोले-भाले युवाओं के बीच आईएसआईएस की विचारधारा का प्रचार-प्रसार शामिल था। साथ ही वे आईईडी बनाने और प्रतिबंधित संगठन के लिए धन जुटाने में संलिप्त पाए गए।''

'इंडि' गठबंधन के नेता चुनाव नतीजों के बाद बैठक करेंगे: कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने सोमवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के घटक दलों के नेता लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद इस संबंध में बैठक करेंगे।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह जानकारी देने के साथ ही उन खबरों को खारिज कर दिया जिनमें कहा गया था कि चुनाव परिणाम के बाद 'इंडि' गठबंधन के नेता बैठक कर आकलन करेंगे तथा राष्ट्रपति से मिलने के अलावा संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करने या विरोध प्रदर्शन करने समेत कई विकल्पों पर भी विचार कर सकते हैं। रमेश ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''परिणाम घोषित होने के बाद जाहिर तौर पर 'इंडि' गठबंधन के नेता मिलेंगे। इसका जो भी अन्य अर्थ लगाया जा रहा है वो पूरी तरह से भ्रामक और गलत है।'' मतगणना मंगलवार सुबह आठ बजे आरंभ होगी।

अधिकतर 'एग्जिट पोल' में लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को प्रचंड बहुमत मिलने का पूर्वानुमान व्यक्त किया गया है। अधिकतर सर्वेक्षणों में राजग को 350 से अधिक सीट मिलने की संभावना जताई गई है। अगर असल परिणाम भी एग्जिट पोल के अनुमान के मुताबिक रहते हैं तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार बड़े बहुमत के साथ सत्ता संभालेंगे।

कांग्रेस और 'इंडि' गठबंधन के अन्य घटक दलों ने एग्जिट पोल को खारिज कर दिया और दावा किया कि विपक्षी गठबंधन अगली सरकार बनाएगा। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रविवार को कहा था, ''इसे एग्जिट पोल नहीं कहा जाता है बल्कि इसका नाम 'मोदी मीडिया पोल' है। यह मोदी जी का पोल है, यह उनका 'फैंटेसी पोल' है।''

कांग्रेस नेताओं ने दावा किया है कि 'इंडि' गठबंधन 295 से अधिक सीटें जीतेगा और सरकार बनाएगा।

लोस चुनाव: उम्मीदवारों में 2,572 करोड़पति, 1,643 पर आपराधिक मामले

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। देश में इस बार लोकसभा चुनाव लड़ने वालों में से 2,572 उम्मीदवार करोड़पति हैं, जबकि 1,643 उम्मीदवार ऐसे हैं जिनके खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं।

चुनाव सुधारों के लिए काम करने वाले गैर लाभकारी संगठन 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' (एडीआर) और नेशनल इलेक्शन वाच द्वारा किए गए विश्लेषण से उम्मीदवारों के बारे में यह जानकारी सामने आई। इसमें चुनाव लड़ रहे 8,360 उम्मीदवारों में से 8,337 का विश्लेषण किया गया जिससे उनकी पृष्ठभूमि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई है। इसमें आपराधिक रिकॉर्ड, वित्तीय स्थिति, शिक्षा और लैंगिक प्रतिनिधित्व शामिल है।

विश्लेषण से पता चला कि 20 प्रतिशत उम्मीदवारों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं, जो 2019 के 19 प्रतिशत, 2014 के 17 प्रतिशत और 2009 के 15 प्रतिशत से अधिक है। जिन 8,337 उम्मीदवारों का विश्लेषण किया गया उनमें से 1,643 पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें 1,191 (14 प्रतिशत) पर बलात्कार, हत्या और महिलाओं के विरुद्ध अपराध सहित गंभीर आपराधिक आरोप हैं। उम्मीदवारों के वित्तीय विवरण से पता चलता है कि इस बार बड़ी संख्या में धनी व्यक्तियों ने चुनाव लड़ा है। कुल उम्मीदवारों में से 31 प्रतिशत करोड़पति हैं, यानी कुल करोड़पति उम्मीदवारों की संख्या 2,572 है। यह पिछले चुनावों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है जो राजनीतिक मैदान में ज्यादा धनी उम्मीदवारों के प्रवेश की प्रवृत्ति को दर्शाती है। प्रत्येक उम्मीदवार की औसत संपत्ति 6.23 करोड़ रुपये है जो चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों के पास महत्वपूर्ण संपत्ति को दर्शाती है। आम चुनाव 19 अप्रैल से एक जून के बीच सात चरणों में हुआ। मतों की गिनती चार जून को होगी।

बेंगलूरु में जून माह में एक दिन की बारिश का 133 साल का रिकॉर्ड टूटा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। बेंगलूरु में दो जून को 111 मिलीमीटर बारिश हुई, जिससे जून में एक दिन में सबसे अधिक बारिश का 133 साल पुराना रिकॉर्ड टूट गया। मौसम विभाग के अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), बेंगलूरु के वैज्ञानिक एन. पुवियारसन ने 'पीटीआई-भाषा' के साथ बातचीत में पुष्टि की कि दो जून को पिछले 133 वर्षों में इस महीने में एक दिन की सबसे अधिक बारिश हुई। उन्होंने यह भी कहा कि अकेले एक जून और दो जून को हुई 140.7 मिलीमीटर वर्षा जून के मासिक औसत से अधिक थी। 'बंगालवेदरमेन' नाम के 'एक्स' यूजर ने एक पोस्ट में कहा कि आईएमडी के अनुसार, दो जून को एक दिन में 111 मिमी बारिश दर्ज की गई जो जून महीने के औसत 110.3 मिमी से अधिक है। उन्होंने कहा कि जून में सबसे अधिक एक दिन की बारिश 16 जून, 1891 को दर्ज की गई थी। भारी बारिश के कारण बेंगलूरु में कई स्थानों पर जनजीवन प्रभावित हुआ। जयनगर के निवासियों ने गिरे हुए पेड़ों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं। रविवार रात ट्रिनिटी मेट्रो स्टेशन के पास मेट्रो ट्रैक पर एक पेड़ गिर गया, जिससे सेवा प्रभावित हुई। गिरे हुए पेड़ों के अलावा सड़कों पर जलभराव से लोगों को असुविधा हुई। आईएमडी केंद्र, बेंगलूरु के प्रमुख सी.एस. पाटिल ने कहा कि दक्षिण-पश्चिमी मानसून कर्नाटक में आगे बढ़ गया है और पांच जून तक कुछ जिलों के लिए 'येलो' अलर्ट जारी किया गया है।

उन्होंने कहा कि तटीय कर्नाटक में दक्षिण कन्नड़, उडुप्पी और उत्तर कन्नड़, उत्तरी कर्नाटक में बागलकोट, बेलगावी, धारवाड़, गदग, हावेरी, कोप्पल और विजयपुरा तथा दक्षिण कर्नाटक में बल्लारी, बेंगलूरु (ग्रामीण और शहरी), दावणगेरे, चित्रदुर्ग, हासन, मैसूरु, तुमकुरु में अगले दो दिन में भारी वर्षा होने की संभावना है। इस बीच, उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने कहा कि वह जल्द ही वर्षा प्रभावित इलाकों का दौरा कर हालात का जायजा लेंगे।

उन्होंने विधान सौधा में पत्रकारों से बातचीत में कहा, हम विधान परिषद चुनावों के बाद अधिकारियों की बैठक करेंगे और बारिश से संबंधित मुद्दों का समाधान करेंगे।

मंत्री को हटाने की भाजपा की मांग पर सिद्दरामैया ने कहा-

एसआईटी की रिपोर्ट के आधार पर करेंगे फैसला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामैया ने सोमवार को कहा कि उन्होंने मंत्री बी. नागेंद्र का इस्तीफा नहीं मांगा है तथा इस संबंध में विशेष जांच दल (एसआईटी) की रिपोर्ट के आधार पर कोई फैसला किया जाएगा। नागेंद्र एक सरकारी निगम से अवैध तरीके से धन स्थानांतरण के आरोपों का सामना कर रहे हैं।

सिद्दरामैया ने विपक्षी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर भी सवाल उठाते हुए पूछा कि अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री नागेंद्र को पद से हटाने के लिए सरकार की समय सीमा तय करने वाले वे कौन होते हैं। भाजपा ने सरकार को छह जून तक नागेंद्र का इस्तीफा लेने और ऐसा न करने पर राज्यभर में प्रदर्शन करने की धमकी दी है। भाजपा ने कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड से जुड़े कथित अवैध धन हस्तांतरण मामले की सीबीआई जांच और नागेंद्र को मंत्री पद से तत्काल बर्खास्त करने की मांग की है।

मुख्यमंत्री ने एक सवाल के जवाब में पत्रकारों से कहा, मैंने (नागेंद्र का) इस्तीफा नहीं मांगा है... एसआईटी की रिपोर्ट अभी नहीं आई है, इसे कुछ दिन पहले ही गठित किया गया है। देखते हैं कि वे अपनी रिपोर्ट में क्या देते हैं। जब वे अपनी रिपोर्ट दे देंगे तो हम निर्णय लेंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्होंने नागेंद्र से कोई स्पष्टीकरण मांगा है, उन्होंने कहा, मैंने अभी तक नहीं पूछा है। मुझे प्रारंभिक रिपोर्ट देखनी होगी। रिपोर्ट देखने के बाद हम निर्णय लेंगे।

सिद्दरामैया और उपमुख्यमंत्री डी.के शिवकुमार ने शनिवार को कहा कि सरकार इस मामले में किसी को नहीं बचाएगी और चाहे कोई भी शामिल हो, कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। अवैध धन हस्तांतरण का कथित मामला तब प्रकाश में आया जब निगम के लेखा अधीक्षक चंद्रशेखर पी. ने 26 मई को आत्महत्या कर ली। उन्होंने खुदकुशी करने से पहले एक पत्र लिखा था।

पत्र में उन्होंने अवैध धन हस्तांतरण का जिक्र करते हुए कुछलोगों के नाम लिखे थे और कहा था कि 'मंत्री' ने धन हस्तांरण के लिए मौखिक आदेश दिए थे।

एग्जिट पोल बेतुका, कर्नाटक में कांग्रेस 15 से 20 सीट जीतेगी : सिद्दरामैया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामैया ने सोमवार को पार्टी नेता राहुल गांधी के उस बयान का समर्थन किया कि एग्जिट पोल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मीडिया का पोल है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस कर्नाटक की 28 लोकसभा सीट में से 15 से 20 सीट पर जीत दर्ज करेगी। राहुल गांधी ने रविवार को एग्जिट पोल को मोदी मीडिया 'पोल' करार दिया था।

लोकसभा चुनाव के सातवें एवं अंतिम चरण के बाद शनिवार को विभिन्न टीवी चैनलों पर प्रसारित एग्जिट पोल में पूर्वानुमान लगाया गया है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को लगातार तीसरी बार लोकसभा में बहुमत प्राप्त होगा। एग्जिट पोल में यह भी पूर्वानुमान लगाया गया है कि भाजपा और जनता दल सेक्युलर के गठबंधन को कर्नाटक में भारी जीत मिलेगी और राज्य की सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी दोहरे अंक को पार नहीं कर पाएगी।

सिद्दरामैया ने संवाददाताओं से कहा, राहुल गांधी पहले ही एग्जिट पोल पर प्रतिक्रिया दे चुके है। उन्होंने इसे नरेन्द्र मोदी मीडिया सर्वेक्षण करार दिया है। कर्नाटक में हम अधिकतर सीट पर जीत दर्ज

करेंगे, हम 15 से 20 सीट जीतेंगे। उन्होंने कहा, ''(एम) मल्लिकार्जुन खरगे (कांग्रेस अध्यक्ष) ने कहा है कि इंडिया' गठबंधन पूरे देश में 295 सीट पर जीत दर्ज करेगा। मैं इसका समर्थन करता हूं।''

पिछले आम चुनाव में कांग्रेस ने जद (एस) के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था और दोनों दलों को महज एक-एक सीट पर जीत मिली थी जबकि भाजपा ने 25 सीट पर जीत दर्ज की थी। मांड्या सीट पर एक निर्दलीय उम्मीदवार ने भाजपा के समर्थन से जीत दर्ज की थी। इस बार जद (एस) भाजपा के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ रही है और उसने हासन, मंडया और कोलार क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे हैं।

मतगणना केन्द्रों में कड़े सुरक्षा प्रबंध : बी. दयानंद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। बेंगलूरु की तीन लोकसभा सीटों पर हुए मतदान के बाद अब 4 जून को होने वाली मतगणना के लिए पुलिस चाकचौबंद व्यवस्था की है। इन तीनों सीटों के लिए लगभग 2400 पुलिस अधिकारी और अनेक जवानों को नियुक्त किया गया है। बेंगलूरु नगर पुलिस आयुक्त बी. दयानंद ने सोमवार को यहां पत्रकारों को बताया कि मंगलवार को सुबह से शुरु होने वाली मतगणना के लिए सुरक्षा के सभी उपाय किए गए हैं।

बेंगलूरु के माउन्ट कार्मल कॉलेज जहां बेंगलूरु मध्य लोकसभा सीट के लिए, सेंट जोफस इंडियन स्कूल जहां बेंगलूरु उत्तर लोकसभा सीट के लिए, एसएमआरसीबी कॉलेज जहां बेंगलूरु दक्षिण लोकसभा सीट के लिए मतगणना की जाएगी यहां सुरक्षा के विशेष उपाय किए गए हैं। इन तीनों सेन्टरों में 1524 पुलिस अधिकारी नियुक्त होंगे। साथ ही 13 आर्मड कम्पनी, 4 यूआरटी बैटेलियन, सीएआर, सीएपीएफ की टुकड़ियां तैनात की गई है।

मंगलवार को सुबह से लेकर रात्रि 12 बजे तक धारा 144 निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। इस दरम्यान सभी शराब की दुकानों पर भी पाबंदी लगाई गई हैं। मतगणना के बाद कोई भी विजय उत्सव यात्रा निकालने पर मंगलवार को प्रतिबंध लगाया गया है।

बेंगलूरु में मार्केटिंग पेशेवर की कार पर स्कूटर चालक ने किया हमला

बेंगलूरु/दक्षिण भारत । बेंगलूरु के विबग्योर हाई स्कूल रोड पर एक मार्केटिंग पेशेवर की कार को एक स्कूटर चालक ने कथित तौर पर हमला करके क्षतिग्रस्त कर दिया। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह घटना कार में लगे डैशबोर्ड कैमरे में रिकॉर्ड हो गई है और स्कूटर चालक की तलाश की जा रही है, ताकि हमले के पीछे की वजह का पता लगाया जा सके।

सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर किये गए पोस्ट में दीपक जैन ने अपनी आपबीती सुनाई और हमले की फुटेज साझा की। इस हमले की वजह से वह सदमे में आ गए थे। उन्होंने कहा कि शनिवार को सुबह 11.39 बजे कर्नाटक के पंजीकरण संख्या वाली भूरे रंग की ओला स्कूटर ने बायीं तरफ से अचानक उनकी कार से आगे निकलने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि शुरू में उन्हें कुछ भी संदिग्ध नहीं लगा, लेकिन कुछ सौ मीटर दूर जाने पर उन्हें एहसास हुआ कि स्कूटर चालक उनका पीछा कर रहा है। उन्होंने कहा कि वह उन्हें रुकने के लिए चिल्ला रहा था और हॉर्न बजा रहा था। उन्होंने बताया कि इसके बाद उसने कार के सामने अपनी स्कूटर खड़ी कर दी।

जैन ने दावा किया, स्कूटर चालक ने गुस्से में आकर सड़क से एक नारियल उठा लिया। जब वह नारियल से हमला करने के लिए मेरी कार के पास आया, तो उसका चेहरा दिखाई दे रहा था। सुबह 11.40 बजे उसने मेरी कार की दाहिनी ओर की खिड़की तोड़ दी और मुझे इसे खोलने के लिए मजूबर किया। इसके बाद उसने कार का दाहिना ओआरवीएम (आउटर रियर व्यू मिरर) तोड़ दिया और आक्रामक रूप से चिल्लाना जारी रखा...उसने खिड़की पर कई बार प्रहार किया, और जब मैं डरी हुई हालत में भागने की कोशिश कर रहा था, तो उसने कार के पिछले शीशे पर नारियल फेंक दिया और भाग गया। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि जैन की शिकायत के आधार पर वर्थुर पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया है और स्कूटर चालक को पकड़ने के प्रयास जारी हैं।

ईमानदारी, वफादारी और बहादुरी को अपनाएं युवा सैनिक : ब्रिगेडियर जितेन आले

बेंगलूरु एएससी केंद्र से अग्निवीरों का तीसरा बैच उत्तीर्ण हुआ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। सशस्त्र बलों की तीनों सेवाओं में सैनिकों की भर्ती के लिए भारत सरकार द्वारा अनुमोदित अग्निपथ योजना के अंतर्गत, अग्निवीरों को एएससी केंद्र (उत्तर) में प्रशिक्षित किया जा रहा है। अग्निवीरों के तीसरे बैच का प्रशिक्षण एक नवंबर, 2023 से शुरू हुआ, जिसमें 261 अग्निवीर चालक मोटर वाहन (डीएमवी) सोमवार को केंद्र से उत्तीर्ण हुए। सेना सेवा कोर केंद्र (उत्तर)-1 एटीसी के सेंटर कमांडेंट ब्रिगेडियर जितेन आले ने अग्निवीरों की पासिंग आउट परेड की समीक्षा की। उन्होंने अपने भाषण में युवा सैनिकों से 'ईमानदारी, वफादारी और बहादुरी' के सैनिक मूल्यों को अपनाने का भी आह्वान किया।

इस समारोह में अग्निवीरों के माता-पिता भी मौजूद थे। सभी अभिभावकों को भारतीय सेना द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित 'गौरव पदक' से सम्मानित किया गया, जो उनके बच्चों को राष्ट्र की सेवा में सेना के योद्धाओं में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के उनके नेक कार्य के प्रतीक के रूप में है।

ईशा द्वारा विरुदनगर में तीन लाख पौधे लगेंगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। ईशा के कावेरी आह्वान अभियान से विरुदनगर में 3,00,000 पौधे लगाए जाएंगे। विधायक एस. थंगापांडियन, सांसद दानुश एम. कुमार और नगर पालिका अध्यक्ष पवित्रा श्याम ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया और पौधे वितरित किए। विश्व पर्यावरण दिवस से पहले, शुभारंभ कार्यक्रम 3 जून को राजपलायम में हुआ।

तमिलनाडु विधानसभा के सदस्य एस. थंगापांडियन और तेनकासी के सांसद धनुष एम. कुमार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और किसानों को पौधे वितरित किए। ईशा की कावेरी आह्वान पहल का लक्ष्य वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान तमिलनाडु में 12.1 मिलियन पेड़ लगाना है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर तमिलनाडु के प्रत्येक जिले में उद्घाटन समारोह आयोजित किए जा रहे हैं।

विरुदनगर जिले के राजपलायम में चक्का राजाफोर्ट मैदान में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। विधायक एस. थंगापांडियन, सांसद श्री दानुश एम. कुमार और नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पवित्रा श्याम ने विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया और पौधे रोपे। पिछले साल, अकेले इरोड जिले में 275,000 पेड़ लगाए गए, जिससे तमिलनाडु भर में लगाए गए कुल 11 मिलियन पेड़ों में योगदान मिला। वर्ष 2019 में शुरू किए गए कावेरी कॉलिंग आंदोलन का उद्देश्य तमिलनाडु और कर्नाटक के कावेरी बेसिन क्षेत्रों में हरित आवरण को बढ़ाकर कावेरी नदी को पुनर्स्थापित करना है। यह पहल कृषि भूमि पर वृक्ष आधारित कृषि को बढ़ावा देती है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है, जल धारण क्षमता बढ़ती है और किसानों की आय में वृद्धि होती है।

'रेव पार्टी' मामले में तेलुगू फिल्म अभिनेत्री हेमा गिरफ्तार

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। बेंगलूरु रेव पार्टी' मामले की जांच कर रही केंद्रीय अपराध शाखा (सीसीबी) ने सोमवार को तेलुगू फिल्म अभिनेत्री हेमा से पूछताछ के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस पार्टी का आयोजन इलेक्ट्रॉनिक सिटी के निकट एक फार्म हाउस में 19 मई को किया गया था। सीसीबी ने हेमा को सोमवार को अपने दफ्तर बुलाया था।

सूत्रों ने बताया कि अपनी पहचान छिपाने के लिए वह बुर्का पहनकर अधिकारियों के समक्ष पेश हुईं और उनका जवाब संतोषजनक नहीं रहने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। सीसीबी सूत्रों के अनुसार, जन्म दिन के बहाने इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें ज्यादातर लोग आंध्र प्रदेश और तेलंगाना से आये थे। उन्होंने बताया कि कुछ लोग बेंगलूरु से भी थे। सीसीबी ने एक गुप्त सूचना के आधार पर छापा मारा और कार्यक्रम में शामिल लोगों के रक्त के नमूने लिए।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि रक्त जांच रिपोर्ट में हेमा सहित 86 लोगों के मादक पदार्थों का सेवन किये होने की पुष्टि हुई। सूत्रों के मुताबिक, कुल 103 लोग कार्यक्रम में शामिल हुए थे। इनमें 73 पुरुष और 30 महिलाएं थीं।

भूत-प्रेत से छुटकारे के नाम पर नाबालिग से बलात्कार करता रहा मौलवी, गिरफ्तार हुआ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चित्रदुर्गा। नाबालिग लड़की को भूत-प्रेत से मुक्ति दिलाने के बहाने उससे बार-बार बलात्कार करने के आरोप में कर्नाटक पुलिस ने सोमवार को चित्रदुर्ग से एक मौलवी को गिरफ्तार किया है। इतना ही नहीं आरोपी ने इलाज के नाम पर पीड़िता के भाई से भी उसका यौन शोषण करवाया। यह मामला चित्रदुर्ग महिला पुलिस थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने बलात्कार के आरोपी मौलवी के खिलाफ पोक्सो के तहत मामला दर्ज किया है।

पुलिस ने बताया कि तीन साल से नाबालिग कुरान पढ़ने के लिए मस्जिद जाती थी। आरोपी ने उसके माता-पिता को बताया था कि उस पर बुरी आत्माओं का साया है, इसके लिए उसके घर पर एक

विशेष अनुष्ठान करने की जरूरत है। पुलिस ने कहा, ''आरोपी नाबालिग को ठीक करने के नाम पर छह से सात महीने तक सप्ताह में एक बार लड़की के घर जाता था। घर जाने के बाद वह पीड़िता और उसके भाई को एक कमरे में ले जाता था और माता-पिता को कमरे से बाहर रहने के लिए कहता था।''

मौलवी ने पीड़िता के भाई को विश्वास में ले लिया जिससे उसे यकीन हो गया कि उसकी बहन पर बुरी आत्माओं का साया है और मुक्ति के लिए उसका यौन शोषण किया जाना जरूरी है। उसने पीड़िता को ठीक करने के नाम पर भाई से उसका यौन शोषण भी करवाया। आरोपी ने इस कृत्य को रिकॉर्ड भी किया और उसने भी नाबालिग के साथ बलात्कार किया। पुलिस के अनुसार, यह पूरा वाकया छह महीने तक चलता रहा। घटना तब सामने आई जब माता-पिता बेटी को पेट दर्द की शिकायत के बाद डॉक्टर के पास ले गए। पीड़िता की मां की शिकायत के आधार पर पुलिस मामला दर्ज कर आगे की जांच में जुट गई है। पुलिस ने पीड़िता के भाई के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।

ओम बिरला, चार केंद्रीय मंत्रियों सहित कुल 266 उम्मीदवारों के राजनीतिक भाग्य का होगा फैसला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान की 25 संसदीय सीट पर हुए चुनाव के लिए मतगणना मंगलवार को होगी। इसके साथ ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और चार केंद्रीय मंत्रियों सहित 266 उम्मीदवारों के राजनीतिक भाग्य का फैसला होगा। अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार सुबह आठ बजे से शुरू होने वाली मतगणना के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। राज्य में लोकसभा के साथ-साथ बागीदौरा विधानसभा सीट के लिए हुए उपचुनाव का परिणाम भी कल घोषित किया जाएगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि कुल 29 केंद्रों पर मतगणना होगी। जोधपुर, नागौर, करौली-धौलपुर और श्रीगंगानगर लोकसभा क्षेत्र में दो-दो मतगणना केंद्र होंगे।

लोकसभा चुनाव के कार्यक्रम के तहत राजस्थान में पहले और दूसरे चरण में 19 और 26 अप्रैल को मतदान हुआ था। गुप्ता ने बताया कि सभी मतगणना स्थलों पर त्रिस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था होगी। राजस्थान की पांच से सात सीट पर 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इंक्लूसिव अलायंस' (इंडिया) की जीत का अनुमान जताने वाले एग्जिट पोल से उत्साहित कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने 12-13 सीट जीतने का भरोसा जताया है। हालांकि, मुख्यमंत्री शर्मा ने भरोसा जताया है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)एक बार फिर राज्य की सभी 25 सीट पर जीत हासिल करेगी।

राज्य की 25 लोकसभा सीट पर कुल 266 उम्मीदवार मैदान में हैं जिनमें 247 पुरुष और 19 महिलाएं हैं। इन चुनावों में जिन प्रमुख नेताओं के राजनीतिक भाग्य का फैसला होना है उनमें लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, अर्जुन राम मेघवाल, भूपेंद्र यादव और कैलाश चौधरी शामिल हैं। अन्य प्रमुख उम्मीदवारों में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत हैं जो जालौर से चुनाव लड़ रहे हैं।

राजस्थान में चुनावी समर में करीब 10 सीट पर कड़ा मुकाबला देखा जा रहा है। कांग्रेस ने सीकर सीट पर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) और नागौर में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) के साथ रणनीतिक गठजोड़ किया तो उसने बांसवाड़ा में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) को समर्थन देने की घोषणा की। इसके विपरीत भाजपा ने सभी 25 सीट पर चुनाव लड़ा।

कोटा, जालौर, सीकर, नागौर, चूरू, झुंझुनू, टोंक-सवाईमाधोपुर, बाड़मेर, बांसवाड़ा और जोधपुर ऐसी सीट हैं जहां कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली और वरिष्ठ नेताओं की साख दांव पर लगी है।

कोटा में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का सीधा मुकाबला कांग्रेस उम्मीदवार प्रहलाद गुंजल से है। जोधपुर में सचिन पायलट के वफादार नए चेहरे करण सिंह उचियारड़ा और केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के बीच दिलचस्प मुकाबला है। बाड़मेर निर्वाचन क्षेत्र में निर्दलीय उम्मीदवार रविंद्र सिंह भाटी ने भाजपा और कांग्रेस दोनों के उम्मीदवारों, खासकर केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी को चुनौती दी।

नागौर सीट पर दो जाट नेता आरएलपी के हनुमान बेनीवाल और भाजपा की ज्योति मिर्धा के बीच मुकाबला है। बीकानेर सीट पर केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल के सामने कांग्रेस के गोविंद राम मेघवाल हैं। चूरू में कांग्रेस ने दो बार के सांसद राहुल कस्वां को मैदान में उतारा। कस्वां भाजपा द्वारा टिकट काटे जाने पर कांग्रेस में चले गए थे। भाजपा ने चूरू में नए चेहरे पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झाझड़िया को मौका दिया।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा ने रविवार को पार्टी नेताओं के साथ ऑनलाइन माध्यम से बैठक की और इस दौरान 12-13 सीट पर जीत का भरोसा जताया, जिनमें चूरू, झुंझुनू, बाड़मेर, दौसा, भरतपुर, टोंक-सवाई माधोपुर, करौली-धौलपुर, नागौर (इंडिया गठबंधन), सीकर (इंडिया गठबंधन) और बांसवाड़ा (बीएपी को समर्थन) शामिल हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि कड़े मुकाबले वाली आठ सीटों पर कांग्रेस बढ़त में है जिनमें कोटा, अलवर, श्रीगंगानगर, जयपुर ग्रामीण, जालौर, जोधपुर, बीकानेर और चित्तौड़गढ़ सीट शामिल हैं।

नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रचंड बहुमत से देश की सत्ता संभालने वाले हैं : मीणा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कैबिनेट मंत्री डॉ. किरोडीलाल मीणा ने कहा कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रचंड बहुमत से देश की सत्ता संभालने वाले हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव परिणाम में कांग्रेस और उनके सहयोगी दल पानी पी जाएंगे। जिला भाजपा संगठन की ओर से दौसा के गांधी तिराहा बस स्टैंड पर लगाई प्याऊ पर सोमवार को जलसेवा के लिए पहुंचे डा मीणा ने मीडिया से बातचीत करते हुए कांग्रेस प्रत्याशी मुरारीलाल मीणा पर तंज भी कसा। उन्होंने कहा कि मुरारीलाल को घमंड हो गया कि वे दौसा से भाजपा का खात्म कर देंगे। लेकिन आरएसएस और भाजपा को इंदिरा गांधी ही नहीं दुनिया की कोई ताकत खत्म नहीं कर सकी। घमंड भरा बयान देना मुरारीलाल मीणा के लिए अच्छा नहीं है। कांग्रेस नेताओं द्वारा केंद्र में भाजपा सरकार की विदाई के बयान पर डा किरोडी ने कहा कि कांग्रेस के नेताओं ने विधानसभा चुनाव में भी पूर्ण बहुमत से सरकार रिपीट होने का दावा किया था। लेकिन बनी भाजपा की सरकार।

डा किरोडी ने लोकसभा चुनाव की मतगणना से पहले एक बार फिर मंत्री पद से इस्तीफा देने का बयान दोहराया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने मुझे 11 सीटों की लिस्ट दी। इनमें 7 सीटों पर हमने ज्यादा मेहनत की। यदि दौसा, अलवर, जयपुर ग्रामीण, भरतपुर, धौलपुर-करौली, कोटा-बूंदी, टोंक-सवाईमाधोपुर सीट से भाजपा हारी तो इस्तीफा दे दूंगा। डा किरोडी ने यह भी कहा कि बाड़मेर-जैसलमेर जैसी कुछ सीटों पर संशय है। हालाकि दौसा सीट से भाजपा की जीत होनी चाहिए। डा किरोडी ने प्रधानमंत्री के दौसा आने से पहले महवा में बयान दिया था कि दौसा से बीजेपी नहीं जीतीं तो इस्तीफा दे दूंगा। उन्होंने कहा कि मंगलवार को लोकतंत्र की रक्षा का पिटारा खुलेगा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अबकी बार 400 पार का का नारा सच साबित होगा।

राजस्थान में लोकसभा चुनाव की मतगणना आज सुबह आठ बजे होगी शुरु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में लोकसभा की 25 सीटों पर हुए चुनाव एवं बांसवाड़ा जिले की बागीदौरा विधानसभा क्षेत्र में हुए उपचुनाव की मतगणना मंगलवार सुबह आठ बजे कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शुरु होगी। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता के अनुसार राजस्थान में मतगणना की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और राज्य के 25 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 29 केंद्रों पर मतगणना होगी। इनमें जोधपुर, नागौर, करौली- धौलपुर एवं गंगानगर लोकसभा क्षेत्र के लिए दो-दो मतगणना केंद्र बनाये गये हैं। प्रदेश में 53 हजार 128 मतदान केंद्रों पर हुए मतदान की मतगणना 235 कक्षों में होगी तथा पोस्टल बैलट से डाले गए मतों की गणना के लिए 62 कक्षों की व्यवस्था की गई हैं। पहले पोस्टल बैलेट मतों की गिनती की जायेगी और साढ़े आठ बजे से ईवीएम से डाले गये मतों गिनती शुरु की जायेगी।

उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के मतों की गणना के लिए 2713 टेबल्स और पोस्टल बैलेट एवं ईटीबीपीएस से डाले गए मतों की गणना के लिए 790 टेबल्स लगाई गई हैं और सभी 25 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए मतगणना 4033 राउंड में होगी। विधानसभा क्षेत्रवार 13 से 28 राउंड की मतगणना होगी। जोधपुर लोकसभा क्षेत्र के जोधपुर विधानसभा क्षेत्र में सबसे कम 13 राउंड और राजसमंद लोकसभा क्षेत्र के मेड़ता विधानसभा क्षेत्र में सबसे अधिक 28 राउंड की मतगणना होगी जबकि लोकसभा क्षेत्रवार सबसे कम 20 राउंड टोंक-सवाई माधोपुर और सबसे अधिक 28 राउंड राजसमंद लोकसभा क्षेत्र में होंगे। गुप्ता ने बताया कि मतगणना स्थल पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है और सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों, पुलिस आयुक्त एवं पुलिस अधीक्षकों को मतगणना केंद्र में सुरक्षा मापदंडों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। सभी मतगणना स्थलों पर त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था होगी।

उन्होंने बताया कि मतगणना टेबल्स के लिए करीब 3550 माइक्रो ऑब्जर्वर और 1200 से अधिक सहायक रिटर्निंग अधिकारी (एआरओ) नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि काउंटिंग हॉल में संपूर्ण मतगणना प्रक्रिया की 360 डिग्री सीसीटीवी कैमरा या वीडियोग्राफी से मय दिनांक और समय की मोहर के साथ कवरेज की जाएगी। उल्लेखनीय है कि चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के 25, कांग्रेस के 23, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के 25, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी एवं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) का एक-एक प्रत्याशी, अन्य कई राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों एवं निर्दलीयों सहित कुल 266 उम्मीदवारों ने चुनाव मैदान में अपना चुनावी भाग्य आजमाया था। प्रथम चरण में 12 लोकसभा क्षेत्रों में 114 एवं दूसरे चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 152 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा। मतगणना में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत सहित चार केन्द्रीय मंत्रियों, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डा सी पी जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत एवं पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के पुत्र दुष्यंत सिंह, पूर्व मंत्रियों, सांसद, पूर्व सांसद, विधायक एवं पूर्व विधायकों सहित 266 उम्मीदवारों की चुनावी किस्मत खुलने वाली है।

जनता की आवाज भाजपा के खिलाफ : गहलोत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने सोमवार को कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस एवं 'इंडिया' गठबंधन की जीत होना देशहित में है। उन्होंने कहा कि जनता की आवाज भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ है। लोकसभा चुनाव की मतगणना से एक दिन पहले गहलोत ने पार्टी कार्यकर्ताओं से समय पर मतगणना स्थल पर पहुंचने व आखिरी वोट की गिनती होने तक 'काउंटिंग टेबल' को ना छोड़ने की अपील की।

गहलोत ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा,''एग्जिट पोल से केवल भाजपा के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास किया गया है जबकि हम सबने जनता के बीच जाकर उनकी आवाज सुनी है जो भाजपा के खिलाफ है।'' कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए उन्होंने कहा,''आप पूरे उत्साह एवं सकारात्मकता से मतगणना करवाएं।

इस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन की जीत होना देशहित में है।'' गहलोत ने कहा कि वह सभी कांग्रेस उम्मीदवारों, मतगणना प्रक्रिया में शामिल एजेंट, निर्वाच अधिकारियों एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहना चाहूंगे कि सुबह समय पर मतगणना स्थल पर पहुंचे एवं आखिरी वोट की गिनती होने तक 'काउंटिंग टेबल' को ना छोड़ें।

गहलोत के अनुसार फॉर्म 17-सी और ईवीएम के कुल वोटों की संख्या का मिलान करें एवं मिलान ना होने पर संबंधित अधिकारियों के समक्ष आपत्ति दर्ज करवाएं। राज्य की 25 लोकसभा सीट के लिए पड़े वोटों की गिनती मंगलवार सुबह आठ बजे से शुरू होगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल को ज्ञापन देने के बाद भी नहीं रुक रही अवैध शराब की बिक्री, ग्रामीणों ने की महापंचायत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भरतपुर। भरतपुर में ग्राम पंचायत बैलारा कलां में अवैध शराब की बिक्री से ग्रामवासी परेशान है। अवैध शराब की बिक्री रोकने को लेकर ग्रामवासियों ने महापंचायत की और फैसला लिया कि अगर प्रशासन अवैध शराब की बिक्री पर रोक नहीं लगाता है तो एसडीएम कार्यालय और थाने के बाहर अनिश्चितकालीन धरना दिया जाएगा। जानकारी के अनुसार सोमवार को भरतपुर में ग्राम पंचायल बैलारा कलां में ग्रामीणों ने अवैध शराब की बिक्री को लेकर पहापंचायत की। ग्राम पंचायत बैलारा कलां में लोग अवैध शराब की बिक्री का विरोध कर रहे हैं। यहां युवाओं से लेकर बुजुर्ग तक अवैध शराब का सेवन कर रहे हैं। अवैध शराब की बिक्री के चलते गांव का माहौल बगड़ रहा है। यहां बैलारा कलां एवं नगला बघेरा गांव में अवैध शराब की बिक्री खुलेआम हो रही है। शराब की वजह से यहां की महिलाएं और बहन बेटी तक सुरक्षित नहीं हैं। शराब की वजह से यहां चोरी की घटनाओं में भी बढोतरी हुई है।

अवैध शराब की बिक्री रोकने के लिए ग्रामीण सीएम भजनलाल शर्मा को भी ज्ञापन दे चुके हैं, इसके बावजूद प्रशासन ने ना तो काई कार्रवाई की है और ना ही अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगी है। ग्रामीणों का कहना है कि या तो प्रशासन अवैध शराब की बिक्री रोकने के लिए कार्रवाई करे नहीं तो सख्त कदम उठाए जाएंगे और एसडीएम कार्यालय तथा थाने के बाहर अनिश्चितकालीन धरना दिया जाएगा, जिसकी सारी जम्मेदारी प्रशासन की होगी।

राज्यपाल मिश्र ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को यहां राज्यपाल कलराज मिश्र से मुलाकात की। राजभवन ने इसे शिष्टाचार भेंट बताया है। राजभवन के प्रवक्ता के अनुसार, राज्यपाल कलराज मिश्र से मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने सोमवार को राजभवन पहुंच कर मुलाकात की। राज्यपाल मिश्र से उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी। शर्मा ने मुलाकात के फोटो साझा करते हुए सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, आज राजभवन में राज्यपाल कलराज मिश्र से आत्मीय मुलाकात की और प्रदेश से जुड़े विभिन्न जनहित विषयों पर उनके साथ सार्थक चर्चा की। राजस्थान में लोकसभा की 25 सीट और विधानसभा की एक सीट पर हुए मतदान के वोटों की गिनती मंगलवार को होनी है।

जनसेवा में जीवन का कण-कण समर्पित : राठौड़

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री और झोटवाड़ा से भाजपा विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ जी ने सोमवार (03 जून 2024) को मेन 200 फीट चौराहा, हीरापुरा, अजमेर रोड, झोटवाड़ा में जनता के साथ गर्मी से राहत दिलाने के लिए ग्रीन शेड की व्यवस्था की। साथ ही नि:शुल्क शीतल पेयजल सेवा की।

कर्नल राज्यवर्धन ने जनता के साथ मिलकर साफ-सफाई की और कहा, हम सब मिलकर एक स्वच्छ, स्वस्थ व स्वर्णिम विकसित भारत बनाने के लिए संकल्पित हैं। कर्नल राज्यवर्धन ने सभी से स्वच्छ झोटवाड़ा के संकल्प को सिद्ध करने में सहयोग करने का विनम्र निवेदन किया। कर्नल राज्यवर्धन ने क्षेत्रवासियों का आभार जताते हुए कहा कि राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना से निरंतर जनसेवा में उनके जीवन का कण-कण समर्पित है।

राजस्थान में हम भाजपा से ज्यादा सीट जीतेंगे : डोटासरा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में लोकसभा चुनाव की मतगणना से एक दिन पहले कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने दावा किया कि राज्य की जनता ने 'इंडिया' गठबंधन को अच्छी संख्या में वोट दिए हैं और गठबंधन की भारतीय जनता पार्टी से ज्यादा सीट पर जीत होगी। डोटासरा ने सोमवार को यहां संवाददाताओं से कहा, ''राजस्थान की जनता ने, 36 कौम ने इंडिया 'गठबंधन' के उम्मीदवारों को अच्छी संख्या में वोट दिये हैं और हम भाजपा से ज्यादा सीट पर जीतेंगे चाहे यह बढ़त केवल एक सीट की हो।''

उन्होंने कहा कि लगभग 10 सीट पर कांग्रेस 100 प्रतिशत जीत दर्ज करेगी और लगभग आठ सीट ऐसी हैं जहां पर कांग्रेस को बढ़त प्राप्त है। राज्य में लोकसभा की कुल 25 सीट हैं। उन्होंने आरोप लगाया निर्वाचन आयोग को भाजपा और मोदी सरकार ने पूरी तरह से घेरे में ले रखा है, दबाव बना रखा है।

उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ओर से चुनाव आयुक्तों से जो भी शिकायत की गई, उनमें से एक भी शिकायत पर किसी को नोटिस नहीं दिया गया... तो एक तरीके से चुनाव आयोग पंगु बन गया है। उन्होंने कहा कि परिणाम कल आयेंगे लेकिन उनकी पार्टी पूरी तरह से आश्वस्त है कि वह अच्छी संख्या में सीट हासिल करके 'इंडिया' गठबंधन की सरकार में शामिल होगी।

बाड़मेर में महिला ने चार बच्चों को पानी की टंकी में फेंका

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के बाड़मेर जिले के सदर थाना क्षेत्र में एक महिला ने अपने चार बच्चों को खेत में बने पानी के टैंक में फेंक दिया और उसमें खुद भी कूद कर आत्महत्या करने की कोशिश की। पुलिस ने बताया कि धने का तला गांव में हेमी देवी (35) ने अपने चार बच्चों को खेत के पास बने पानी के टैंक में फेंक दिया, इसके बाद वह खुद भी उसमें कूद गयी।

बाड़मेर के पुलिस अधीक्षक नरेंद्र सिंह मीणा ने बताया, एक महिला ने चार बच्चों को पानी की टंकी में फेंक दिया । इसके बाद वह स्वयं भी टंकी में कूद गयी और आत्महत्या करने की कोशिश की। पानी में डूबने से चारों बच्चों की मौत हो गयी । महिला को बचा लिया गया है और उसका उपचार जारी है। उन्होंने बताया कि महिला से पूछताछ की जा रही है कि उसने ऐसा क्यों किया। उन्होंने बताया कि मृत बच्चों की पहचान संजू (9), मंजू (11), कृष्णा (7) और दिनेश (5) के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि शुरुआती जांच में घटना के पीछे पारिवारिक कलह की बात सामने आयी है।

जिला कलक्टर ने अधिकारियों को मानसून पूर्व तैयारी पूरी करने के दिए निर्देश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को आयोजित हुई जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक में जिला कलक्टर प्रकाश राजपुरोहित ने कहा कि आमजन से जुड़े सभी विभागों एवं एजेंसियों के अधिकारी जल्द से जल्द मानसून पूर्व आवश्यक तैयारियां पूरी करें एवं नागरिकों द्वारा दर्ज करवाई गई शिकायतों पर रेस्पॉन्स टाइम न्यूनतम करें ताकि प्रभावितों तक त्वरित राहत पहुंचाया जाए।

उन्होंने अधिकारियों को विभागीय नियंत्रण कक्ष को और अधिक प्रभावी बनाने, पर्याप्त संसाधन जुटाने, मिट्टी के कट्टे, मडपंप सहित उपलब्ध संसाधनों की जांच करने, सामुदायिक केन्द्रों में जरूरी इंतजाम जुटाने, सड़कों से अतिक्रमण हटाने, हाईवे की स्लिप लेन की मरम्मत, खुले विद्युत बॉक्स को बंद करवाने के निर्देश दिये।

जिला कलक्टर ने मानसून से पहले जल्द से जल्द नालों की सफाई का कार्य पूर्ण करने, जल भराव के क्षेत्रों के लिए अतिरिक्त संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने, एंटी मलेरिया एक्टिविटी शुरू करने, सड़कों के गड्ढे भरने, पेचवर्क करवाने, जर्जर भवनों की मरम्मत करवाने, झुके हुए पेड़ों एवं बिजली के खंभों का निस्तारण करवाने, सीवरेज होल पर ढक्कन लगवाने, नेवटा, केवटा एवं चंदलाई सहित अन्य बांधों पर मुस्तैदी बढ़ाने के लिए भी निर्देशित किया।

असम में कई नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं : केंद्रीय जल आयोग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। असम में लगातार हो रही बारिश के कारण कई नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने यह जानकारी दी। आयोग के हाल ही में जारी किए गए बुलेटिन में बताया गया कि राज्य के विभिन्न प्रभावित क्षेत्रों मे जल स्तर गंभीर स्थिति में है।

बुलेटिन के अनुसार, असम के तीन स्थानों पर बाढ़ की स्थिति गंभीर है जहां जलस्तर खतरे के निशान को छू रहा है या उससे अधिक है, लेकिन अभी तक ये बाढ़ के उच्चतम निशान से नीचे है।

सीडब्ल्यूसी ने बताया कि राज्य के विभिन्न जिलों में 39,000 से अधिक विस्थापित लोगों ने 193 राहत शिविरों में शरण ली है। इसके साथ ही 82 अन्य राहत वितरण केंद्र भी बनाए गए हैं। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) समेत कई एजेंसियां और स्थानीय प्रशासन राहत एवं बचाव अभियान चला रहा है जबकि प्रभावित इलाकों में चिकित्सा दलों को भी तैनात किया गया है। बाढ़ के कारण विभिन जिलों से सड़कों, पुल और अन्य संपत्ति समेत बुनियादी ढांचे को

नुकसान की खबरें आयी हैं। सीडब्ल्यूसी के बुलेटिन के अनुसार, बुरीदिहिंग नदी भी उफान पर है। सोमवार सुबह 11 बजे तक इसका जलस्तर 133.54 मीटर था। आयोग ने चेताया कि नदी के इस जलस्तर से आसपास के क्षेत्रों के लिए खतरा बना हुआ है, हालांकि अभी नदी का जलस्तर खतरे के निशान से नीचे है। इसने बताया कि सोनितपुर जिले की जियाभराली नदी भी सामान्य स्तर से ऊपर बह रही है। वर्तमान में इसका जलस्तर 77.30 है। मोरीगांव और नगांव जिलों में कोपिली नदी भी उफान पर है। मोरीगांव के धरमातुल में नदी 56.42 मीटर पर बह रही है, जो खतरे के निशान से 0.42 मीटर ऊपर है। वहीं, नगांव के कामपुर में जलस्तर 61.04 मीटर पर है जो खतरे के स्तर से 0.54 मीटर ऊपर है। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) के एक बुलेटिन में रविवार रात को बताया गया कि बाढ़ से 13 जिलों में 5,35,246 लोग अब भी प्रभावित हैं। शनिवार को 10 जिलों में बाढ़ प्रभावित लोगों की संख्या 6,01,642 थी।

लोकसभा चुनाव में जाति, धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण देखने को मिला : विशेषज्ञ

नई दिल्ली/भाषा। लोकसभा चुनाव के नतीजों का बेसब्री से इंतजार हो रहा है और इस बीच, राजनीतिक विश्लेषकों ने कहा है कि इस साल का चुनाव ''सबसे अधिक ध्रुवीकरण वाले चुनावों में एक'' है जिसमें विभिन्न दलों ने वोट हासिल करने के लिए ''जाति और धर्म'' का जमकर इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि एक ओर जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का जोर विभिन्न पिछड़ी जातियों को हिंदुत्व के खेमे में एकीकृत करने पर रहा, तो वहीं दूसरी ओर विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन ने सत्ता में आने पर जातिगत सर्वेक्षण कराने का वादा कर अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के वोट हासिल करने की कोशिश की।

चुनाव सुधारों पर काम करने वाले गैर लाभकारी संगठन 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' (एडीआर) के सह-संस्थापक जगदीप छोकर ने कहा कि यह चुनाव अब तक के सबसे अधिक ध्रुवीकृत चुनावों में से एक है। उन्होंने पीटीआई-भाषा से कहा, ''जाति, धर्म और क्षेत्र के आधार पर ध्रुवीकरण हुआ है। ऐसा पहले नहीं हुआ था। जाति, चुनावों में मतदाताओं को गोलबंद करने वाला हमेशा से एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। लेकिन यहां जाति और धर्म आधारित राजनीति, दोनों हावी रहे।'' अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ इफ्तिखार अहमद अंसारी ने जिक्र किया कि जातियों को फिर से संगठित किये जाने ने भाजपा को एक चुनौती पेश की है।

अखिलेश यादव ने एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर सवाल उठाया और दावा किया कि एग्जिट पोल करने वाली एजेंसियां सिर्फ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश कर रही हैं। चार जून को होने वाली मतगणना से पहले एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए यादव ने कहा, ''इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) की जीत, देश और जनता की जीत होगी।''

यादव ने कहा, ''हम और आप (मीडिया) लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए लोगों के बीच थे। हम सभी ने देखा है कि उनकी (भाजपा) रैलियों में लोग नहीं थे, उनके टेंट खाली थे...उनके पक्ष में कुछ भी नहीं था।'' एग्जिट पोल पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि एग्जिट पोल करने वाली कई एजेंसियां वही हैं जो भाजपा के लिए बूथ प्रबंधन का काम करती थीं। उन्होंने कहा, ''वे (एग्जिट पोल एजेंसियां) भाजपा के पक्ष में माहौल बना रही हैं।'' पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा,'' जनता स्वतंत्रता सेनानियों की तरह बलिदान करने के लिए तैयार है क्योंकि भाजपा काल में उसका जीवन तो वैसे भी दूभर हो गया है। जनता की सकारात्मक सक्रियता से, देश नकारात्मक ताक़तों से आज़ाद होने जा रहा है। देश-प्रेमी 140 करोड़ जनता की शक्ति के आगे भ्रष्ट और संकीर्ण सोच के चंद देश-विरोधी लोग टिक नहीं सकते हैं। देश का युवा फिर से कफ़न सिर पर बांधकर कह रहा है, 'मेरा रंग दे बसंती चोला'।''सपा अध्यक्ष ने कहा, ''चुनाव खत्म हो चुके हैं। एग्जिट पोल कई चीजें दिखा रहे हैं। भाजपा कई चीजों के लिए जिम्मेदार है। उन्होंने शांति और भाईचारे को बिगाड़ा। उन्होंने आरक्षण खत्म करने की साजिश रची। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ाए। उन्होंने महंगाई और बेरोजगारी को बढ़ावा दिया। गरीब और गरीब हो गए।'' उन्होंने कहा, ''वे (भाजपा) विपक्ष को डराना चाहते हैं। उनकी शुरुआत से ही यही रणनीति रही है। वे ऐसा करते रहे हैं, लेकिन इस बार लोग तैयार हैं।''

सिक्किम: तमांग ने राज्यपाल से मुलाकात कर नई सरकार के गठन का दावा पेश किया

गंगटोक/भाषा। सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने सोमवार को राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य से मुलाकात कर खुद को विधायक दल का नेता चुनने संबंधी एसकेएम के नवनिर्वाचित विधायकों द्वारा पारित प्रस्ताव उन्हें सौंपा और अगली सरकार के गठन का दावा पेश किया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। राजभवन में राज्यपाल से हुई मुलाकात के दौरान सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) के सभी नवनिर्वाचित विधायक उनके साथ थे। आचार्य ने विधायकों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। अधिकारी ने कहा कि तत्काल यह पता नहीं चल पाया है कि मुख्यमंत्री और उनके मंत्रिमंडल का शपथ ग्रहण समारोह कब होगा। निवर्तमान मुख्यमंत्री तमांग ने नई सरकार के गठन से पहले परंपरा के अनुसार रविवार शाम राज्यपाल से मुलाकात कर उन्हें अपना इस्तीफा सौंपा था। आचार्य ने कहा था कि तमांग फिलहाल मुख्यमंत्री बने रहेंगे। रविवार को हुई मतगणना में एसकेएम ने विधानसभा चुनाव में 32 में से 31 सीट जीती हैं। विपक्षी एसडीएफ को एक सीट पर जीत मिली।

गेल (इंडिया) लि. ने 'वाह क्या एनर्जी है' अभियान शुरू किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/दक्षिण भारत। गेल (इंडिया) लिमिटेड ने गेल और उसकी समूह कंपनियों द्वारा पेश किए गए नए, स्वच्छ और पर्यावरण के अनुकूल ईंधन विकल्पों को अपनाने और इनके फायदों पर जानकारी देने के लिए एक शृंखला 'वाह क्या एनर्जी है' शुरू की है।

यह अभियान पूरे भारत में खुदरा प्राकृतिक गैस उपभोक्ताओं को शामिल करने के लिए रणनीतिक रूप से तैयार किया गया है। 'वाह क्या एनर्जी है', जिसमें लघु शृंखला प्रारूप में चार फिल्में शामिल हैं, एक मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की कहानी बताती है। यह दर्शाती है कि कैसे वे ईंधन के उपयोग के बेहतर विकल्प के जरिए अपनी चुनौतियों का समाधान करते हैं। मिश्रा परिवार की कहानी और चरित्र की विनोदपूर्ण एवं भावनात्मक प्रस्तुति इन्हें प्रासंगिक बनाती है, जिससे दर्शक इन लघु फिल्मों का आनंद लेते हैं। इसके साथ ही उन्हें स्वच्छ ईंधन की ओर बदलाव के बारे में सोचने के लिए भी प्रोत्साहन मिलता है।

प्रसिद्ध अभिनेता श्रीकांत वर्मा, दिव्या जगदाले, लव विस्पुते और अहमद खान ने चार लघु-एपिसोडिक फिल्मों में प्रमुख भूमिकाएं निभाई हैं। गेल ने इससे पहले अभिनव ओटीटी शृंखला 'हवा बदले हस्सू' बनाई थी, जो बहु-पुरस्कार विजेता विज्ञान-कथा नाटक है। अभियान का आगाज करते हुए गेल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संदीप कुमार गुप्ता ने कहा कि 'वाह क्या एनर्जी है' को गेल के प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए रणनीतिक रूप से तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक गैस को अधिक स्मार्ट, सुरक्षित, किफायती और भविष्योन्मुखी विकल्प के रूप में प्रस्तुत करके उपभोक्ताओं को प्रेरित करना है, जो पर्यावरणीय चेतना और समाज की उभरती जरूरतों के अनुरूप हो। उन्होंने कहा कि अभियान का उद्देश्य स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए अन्य ईंधनों की तुलना में प्राकृतिक गैस के उपयोग के लाभों को उजागर करना भी है।

भाजपा ने अंतिम चरण के मतदान के बाद बंगाल में पार्टी कार्यकर्ताओं पर हमले होने का दावा किया

कोलकाता/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा चुनाव के सातवें एवं अंतिम चरण के बाद संदेशखालि सहित दक्षिण बंगाल के विभिन्न हिस्सों में भाजपा कार्यकर्ताओं पर हमले होने और धमकी मिलने का सोमवार को दावा किया। हालांकि, उत्तर 24 परगना के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि संदेशखालि में स्थिति काफी हद तक शांतिपूर्ण है।

तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेताओं पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न करने और जमीन हड़पने के आरोप लगने के बाद

संदेशखालि मीडिया की सुर्खियों में रहा था। इन आरोपों के बाद, इलाके में फरवरी में व्यापक स्तर पर प्रदर्शन हुए थे। भाजपा महिला मोर्चा की पश्चिम बंगाल प्रदेश प्रमुख फाल्गुनी पात्रा ने दावा किया कि संदेशखालि के कुछ गांवों में महिलाओं को तृणमूल समर्थकों से धमकियां मिल रही हैं और उन पर हमले हो रहे हैं तथा इलाके में पुलिस छापे मार रही है। कुछ महिलाओं ने आरोप लगाया कि राज्य में सत्तारूढ़ दल के अत्याचार के डर से गांव से पुरुष भाग गए हैं। अधिकारी ने बताया कि विभिन्न घटनाओं के सिलसिले में रविवार को संदेशखालि में कुल सात लोगों को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि सोमवार को इलाके में अब तक कोई बड़ा प्रदर्शन नहीं हुआ है। अधिकारियों ने संदेशखालि की चार ग्राम पंचायतों में मंगलवार शाम तक दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लगा दी है।

क्या स्वामी विवेकानंद के एकता व सद्भावना के आदर्शों में यकीन रखते हैं मोदी : अधीर

कोलकाता/भाषा। कांग्रेस की पश्चिम बंगाल इकाई के प्रमुख अधीर रंजन चौधरी ने सोमवार को पूछा कि क्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, स्वामी विवेकानंद द्वारा दिए गए एकता एवं सद्भावना के आदर्शों में यकीन रखते हैं। कन्याकुमारी के विवेकानंद रॉक मेमोरियल में मोदी के 45 घंटे की ध्यान साधना पूरी करने के दो दिन बाद चौधरी की यह टिप्पणी आई। कांग्रेस नेता ने अपने बरहमपुर निर्वाचन क्षेत्र में एक प्रेस वार्ता में कहा कि स्वामी विवेकानंद ने एकता, सद्भावना और प्रेम की भावना को रेखांकित किया था। उन्होंने कहा, ''स्वामी जी ने हमें एक-दूसरे की मदद करने की, न कि लड़ने की; समावेश करने की, न कि नष्ट करने की शिक्षा दी थी। मैं नहीं जानता कि मोदी इन आदर्शों में यकीन रखते हैं या नहीं।'' लोकसभा चुनाव में राज्य में कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) गठबंधन के प्रदर्शन के बारे में पूछे जाने पर चौधरी ने कहा कि गठजोड़ ''निश्चित रूप से अच्छा प्रदर्शन करेगा।''

बरेली में सहपाठी के गोली मारने से आईटीआई छात्र घायल, आरोपी हिरासत में

बरेली (उप्र)/भाषा। बरेली के सीबीगंज थाना क्षेत्र में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) के 'मैकेनिकल' प्रथम वर्ष के एक छात्र को उसके सहपाठी ने मामूली कहासुनी के बाद गोली मार दी, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस ने सोमवार को बताया कि आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। थाना सीबीगंज के प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) राधेश्याम ने बताया कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) के मैकेनिकल प्रथम वर्ष के दो छात्रों में किसी बात को लेकर विवाद हो गया। उन्होंने कहा कि गाली गलौज के बाद अभिषेक शर्मा (18) ने बैग में रखा तमंचा निकालकर कक्षा में ही अपने साथी छात्र अजीत सिंह (18) को गोली मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

उम्मीद है, असल परिणाम एग्जिट पोल के बिल्कुल उलट होंगे : सोनिया गांधी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने सोमवार को कहा कि उन्हें पूरी उम्मीद है कि लोकसभा चुनाव के असल परिणाम 'एग्जिट पोल' (चुनाव बाद सर्वेक्षण) के अनुमान से बिल्कुल विपरीत होंगे। सोनिया ने कहा, ''हमें प्रतीक्षा करनी होगी। बस, इंतजार कीजिए और देखिए।'' उन्होंने कहा, ''हमें पूरी उम्मीद है कि एग्जिट पोल में जो दिखाया जा रहा है, नतीजे उसके बिल्कुल विपरीत होंगे।''

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से सवाल किया गया था कि चार जून को घोषित होने जा रहे नतीजों से उन्हें क्या उम्मीद है? उन्होंने यह टिप्पणी द्रमुक कार्यालय में तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एम करुणानिधि को उनकी 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद की। अधिकतर 'एग्जिट पोल' में लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राजग को प्रचंड बहुमत मिलने का पूर्वानुमान व्यक्त किया गया है। अधिकतर सर्वेक्षणों में राजग को 350 से अधिक सीट मिलने की संभावना जताई गई है। अगर असल परिणाम भी एग्जिट पोल के अनुमान के मुताबिक रहते हैं तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगाता तीसरी बार बड़े बहुमत के साथ सत्ता संभालेंगे। कांग्रेस और 'इंडिया' गठबंधन के अन्य घटक दलों ने एग्जिट पोल को खारिज कर दिया है और दावा किया है कि विपक्षी गठबंधन अगली सरकार बनाएगा। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रविवार को कहा था, ''इसे एग्जिट पोल नहीं कहा जाता है बल्कि इसका नाम 'मोदी मीडिया पोल' है। यह मोदी जी का पोल है, यह उनका 'फैंटेसी पोल' है।'' कांग्रेस नेताओं ने कहा है कि 'इंडिया' गठबंधन 295 से अधिक सीटें जीतेगा और सरकार बनाएगा। करुणानिधि की 100वीं जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सोनिया गांधी ने कहा, ''डॉ कलैंग्नार करुणानिधि की 100वीं जयंती के शुभ अवसर पर द्रमुक के अपने सहयोगियों के साथ यहां आना मेरे लिए खुशी की बात है।'' उनका कहना था, ''मुझे कई मौकों पर उनसे मिलने, उनकी बातें सुनने और उनकी ज्ञान भरी बातों और सलाह से लाभ उठाने का सौभाग्य मिला। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि मैं उनसे मिली थी।''

बिहार के नालंदा जिले में जद(यू) नेता की हत्या

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बिहारशरीफ/भाषा। बिहार के नालंदा जिले के परवलपुर थाना क्षेत्र के गांव मौआ में सोमवार तड़के जनता दल-यूनाइटेड (जद-यू) के एक नेता की कुछ अज्ञात लोगों ने हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान अनिल कुमार (62) के रूप में हुई है, जिन्होंने नालंदा लोकसभा सीट पर एक जून को हुए मतदान के लिए अपनी पार्टी के खातिर पोलिंग एजेंट के तौर पर काम किया था।

पुलिस के अनुसार घटना सोमवार सुबह करीब साढ़े चार बजे की है जब कुमार वह सैर के लिए निकले थे तभी कुछ हथियार बंद अज्ञात लोगों ने पहले मारपीट की फिर चाकू घोंप दिया। नालंदा के जिलाधिकारी शशांक शुभंकर ने कहा, ''कुमार के परिजन उन्हें निकटतम अस्पताल ले गए, जहां से उन्हें जिला सरकारी अस्पताल में रेफर कर दिया गया। इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।'' उन्होंने कहा, ''सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। घटना की वजह फिलहाल पता नहीं चल पाई है। मुकदमा दर्ज कर लिया गया और आरोपियों की तलाश की जा रही है।''

इंडिया गठबंधन भारी बहुमत से जीतेगा, सारे मनोवैज्ञानिक प्रोपगैंडा धरे के धरे रह जाएंगे : लालू

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद ने सोमवार को कहा कि 'इंडिया' गठबंधन भारी बहुमत से चौंकाने वाला परिणाम देने जा रहा है और सारे के सारे मनोवैज्ञानिक प्रोपगैंडा धरे के धरे रह जाएंगे।

राजद प्रमुख ने सोमवार को यहां एक बयान में कहा, ''विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन भारी बहुमत से चौंकाने वाला परिणाम देने जा रहा है।'' उन्होंने कहा, ''लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा चुनाव में आपने जिस तरह से बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर 'इंडिया' गठबंधन के पक्ष में मतदान किया है, इसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूं।''

मतगणना के एक दिन पहले, राजद प्रमुख ने 'इंडिया' गठबंधन और अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से कहा, ''जो मुहिम हमने शुरू की थी, उसको अभी मंजिल पर पहुँचाना बाकी है, जनता ने अपना मत गठबंधन के विजय के तौर पर दे दिया है लेकिन इस जनमत को सुरक्षित परिणाम तक पहुंचाना हमारा दायित्व है।''

झारखंड में कुएं में डूबने से 32 जंगली बंदरों की मौत

मेदिनीनगर (झारखंड)/भाषा। झारखंड के पलामू जिले में भीषण गर्मी के बीच एक सिंचाई कुएं से पानी पीने की कोशिश में 32 जंगली बंदरों की उसमें डूबने से मौत हो गई। एक वन अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। यह घटना पनकी ब्लॉक के सोरठ गांव में हुई और बंदरों के शव रविवार को मिले, लेकिन अधिकारियों को अब तक घटना की सही तारीख का पता नहीं चल पाया है। मेदिनीनगर प्रमंडल वन पदाधिकारी (डीएफओ) कुमार आशीष ने बताया, सोरठ में सिंचाई कुएं में कुल 32 जंगली बंदर मृत मिले हैं... शवों को बाहर निकाला गया है। पूरा क्षेत्र भीषण गर्मी की चपेट में है और तापमान 44-45 डिग्री सेल्सियस के आसपास बना हुआ है। आशीष ने कहा, इलाके में पानी के स्रोत सूख चुके हैं... जंगली जानवर अपनी प्यास बुझाने के लिए गांवों का रुख कर रहे हैं... ये बंदर पानी पीने की कोशिश में डूब गए।

भारतीय बल्लेबाज केदार जाधव ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पुणे/भाषा। भारत और महाराष्ट्र के बल्लेबाज केदार जाधव ने राष्ट्रीय टीम के लिए आखिरी मैच खेलने के चार साल बाद सोमवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की।

भारत के लिए नवंबर 2014 में रांची में श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के साथ अंतरराष्ट्रीय पदार्पण करने वाले 39 साल के जाधव ने 73 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय और नौ टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले। भारत के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के करीबी माने जाने वाले जाधव ने इस दिग्गज विकेटकीपर-बल्लेबाज की शैली में ही संन्यास की घोषणा की।

जाधव ने 'एक्स' पर लिखा, ''मेरे करियर के दौरान आपके प्यार और समर्थन के लिए धन्यवाद। मुझे क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लिया हुआ समझिए।'' जाधव रविवार को पुणे में शुरू हुई महाराष्ट्र प्रीमियर लीग में कोल्हापुर टस्कर्स की कप्तानी कर रहे हैं और उनकी पोस्ट से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह इस टूर्नामेंट में आगे खेलेंगे या नहीं।

जाधव ने भारत के लिए 73 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय में दो शतक और छह अर्धशतक की मदद से 42.09 के औसत से 1389 रन बनाए। उन्होंने नौ टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों की छह पारियों में 122 रन भी बनाए।

जाधव ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ पारी जनवरी 2017 में पुणे में एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान इंग्लैंड के खिलाफ खेली जब उन्होंने बड़े स्कोर वाले मैच में 76 गेंद में 12 चौकों और चार छक्कों से 120 रन की पारी खेलते हुए अपना दूसरा शतक जड़ा और भारत को तीन विकेट से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

भारत ने 351 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए एक समय 63 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे लेकिन जाधव ने विराट कोहली (122) के साथ पांचवें विकेट के लिए सिर्फ 147 गेंद में 200 रन की साझेदारी करके टीम की जीत सुनिश्चित की।

जाधव ने अपनी ऑफ स्पिन गेंदबाजी से एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में 27 विकेट भी चटकाए।

इंडियन प्रीमियर लीग में जाधव चेन्नई सुपरकिंग्स, (पूर्व में) दिल्ली डेयरडेविल्स, अब भंग हो चुकी कोच्चि टस्कर्स केरल, (पूर्व में) रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर और सनराइजर्स हैदराबाद के लिए भी खेले।

आईसीसी ने टी20 विश्व कप के लिये रिकॉर्ड 11. 25 मिलियन डॉलर ईनाम का ऐलान किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

न्यूयॉर्क/भाषा। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने टी20 विश्व कप के लिये रिकॉर्ड 11 . 25 मिलियन डॉलर (करीब 93 करोड़ 51 लाख रूपये) पुरस्कार राशि का ऐलान किया है जिसमे से विजेता को 2 . 45 मिलियन डॉलर (करीब 20 करोड़ 36 लाख रूपये) दिये जायेंगे ।

उपविजेता को 1 . 28 मिलियन डॉलर मिलेंगे जबकि सेमीफाइनल हारने वाली टीमों को 787500 डॉलर दिये जायेंगे ।

पिछली बार कुल ईनामी राशि 5 . 6 मिलियन डॉलर थी जिसमे से विजेता इंग्लैंड को 1.6 मिलियन डॉलर मिले थे ।

आईसीसी ने एक बयान में कहा ,'' आईसीसी पुरूष टी20 विश्व कप के नौवे सत्र में 20 टीमों के टूर्नामेंट के विजेता को 2 . 45 मिलियन डॉलर ईनाम के तौर पर मिलेंगे जो टूर्नामेंट के इतिहास में सर्वोच्च ईनामी राशि है । इसके अलावा ट्रॉफी भी 29 जून को बारबडोस में फाइनल के बाद दी जायेगी ।'' सुपर आठ से आगे नहीं जा पाने वाली चारों टीमों में से प्रत्येक को 382500 डॉलर दिये जायेंगे जबकि नौवें से 12वें स्थान की टीमों को 247500 डॉलर और 13वें से 20वें स्थान की टीमों को 225000 डॉलर मिलेंगे ।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने कहा ,'' हर टीम को प्रत्येक मैच जीतने पर (सेमीफाइनल और फाइनल के अलावा) 31154 डॉलर मिलेंगे ।''

55 मैचों का टूर्नामेंट 28 दिन तक अमेरिका और वेस्टइंडीज में नौ स्थानों पर खेला जायेगा । इसमें पहली बार 20 टीमें भाग ले रही हैं । पहले दौर के 40 मैचों के बाद शीर्ष आठ टीमें सुपर आठ में पहुंचेंगी । उनमें से चार टीमें सेमीफाइनल खेलेंगी ।

सुविचार

चीजों की कीमत मिलने से पहले होती है और इंसानों की कीमत खोने के बाद।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

जय लोकतंत्र

भारत के लोकसभा चुनाव में 64.2 करोड़ लोगों के मतदान के साथ विश्व कीर्तिमान का बनना अत्यंत प्रशंसनीय है। निश्चित रूप से यह देश के लोकतंत्र की एक बड़ी उपलब्धि है। दुनिया इस आंकड़े को देखकर हैरान है। कई देशों की इतनी जनसंख्या नहीं है, जितनी बड़ी तादाद में यहां लोगों ने वोट डाल दिए! इतना बड़ा देश, जहां दूर-दराज के इलाकों में विषम भौगोलिक परिस्थितियां भी हैं, वहां करोड़ों लोगों के लिए मतदान से संबंधित सुविधाओं का इंतजाम करना कोई आसान काम नहीं है। ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, इटली ... जैसे साधन-संपन्न और कम क्षेत्रफल वाले देशों की सरकारी मशीनरी कुछ करोड़ आबादी के लिए चुनावी इंतजाम करने में हांफने लगती हैं। वहीं, भारत में चुनाव आयोग ने उन देशों की कुल आबादी से कई गुणा ज्यादा मतदाताओं के लिए काफी अच्छे इंतजाम किए और उन्हें मतदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। जो बुजुर्ग स्वास्थ्य संबंधी कारणों से मतदान केंद्रों तक नहीं पहुंच सकते थे, उन्हें घर से मतदान करने की सुविधा दी गई। लोकतंत्र में एक-एक वोट महत्त्वपूर्ण है। कोई भी मतदाता इससे वंचित नहीं रहना चाहिए। चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए भरपूर कोशिशें कीं। कई मतदान केंद्रों पर लोगों ने खूब वोट डाले। इन सबके बावजूद यह कहना गलत नहीं होगा कि अभी काफी गुंजाइश है। पहले चरण में कम मतदान की खबरें चर्चा में रही थीं। जैसे-जैसे चरण आगे बढ़ते गए, मतदान प्रतिशत में सुधार हुआ। देश के लोकतंत्र को इस चुनाव के अनुभवों का लाभ आगे भी मिलना चाहिए।

ऐसे कौनसे उपाय और किए जा सकते हैं, जिनसे मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी हो? प्रतिकूल मौसम, पारिवारिक कार्यक्रम, पढ़ाई और कामकाज के सिलसिले में अन्य शहर या राज्य में निवास करने समेत कई कारण हैं, जो मतदान प्रतिशत बढ़ाने में बाधा डालते हैं। जिस तरह आयु व स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहे बुजुर्गों के लिए घर से मतदान की व्यवस्था की गई, क्या उसी तरह उन मतदाताओं के लिए भी उनके मौजूदा निवास स्थान के आस-पास कोई व्यवस्था की जा सकती है, जो पढ़ाई, रोजगार और अन्य कारणों से मतदान के दिन अपने गांव या शहर नहीं जा सकते? आज किसी मतदान केंद्र पर 60 प्रतिशत वोट पड़ जाते हैं तो यह माना जाता है कि 'अच्छा मतदान' हो गया। इतना प्रचार करने, इतने संसाधन लगाने और इतनी मेहनत करने के बाद किसी केंद्र पर 60 प्रतिशत तक मतदान होता है तो इसे संतोषजनक ही मानना चाहिए। लोकसभा चुनाव पर देश के जितने संसाधन खर्च हो रहे हैं, उन पर गौर करें तो यह आंकड़ा कम से कम 90 प्रतिशत तक पहुंचना चाहिए। मतदान के पात्र लोगों के जितने ज्यादा वोट डलेंगे, लोकतंत्र की तस्वीर उतनी ही ज्यादा उज्ज्वल होगी। बेशक इस चुनाव के हर चरण के साथ चुनाव आयोग की क्षमता, सामर्थ्य और कार्यकुशलता पर लोगों का भरोसा ज्यादा मजबूत हुआ। कुछ नेताओं ने जरूर ईवीएम पर सवाल उठाए, लेकिन मतदाता पूरी तरह आश्वस्त नजर आए। मतगणना के दौरान और उसके बाद राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों, नेताओं और कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे अपनी भावनाओं को काबू में रखें। अगर जीत जाएं तो विनम्रता दिखाएं और सबकी भलाई के लिए काम करें। अगर नतीजे मनोनुकूल न आएं तो ईवीएम में दोष ढूंढ़ने के बजाय जनता से जुड़ाव पर ध्यान दें, जनमहत्त्व के मुद्दे उठाएं, रचनात्मक समाधान पेश करें और अगली बार अपने प्रदर्शन में सुधार करें। चुनावी राजनीति का उद्देश्य वाहवाही पाना और दबदबा बढ़ाना नहीं, बल्कि जनकल्याण होना चाहिए। अगर कोई राजनीति में न रहना चाहे तो भी जनकल्याण करने के अनेक मार्ग हैं।

ट्वीटर टॉक

मध्य प्रदेश के पीपलोदी में हुई सड़क दुर्घटना में झालावाड़ व बारां क्षेत्र के कई लोगों की मृत्यु हृदयविदारक है। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें। दुख की इस घड़ी में मेरी गहन संवेदनाएं पीड़ित परिजनों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूँ।

-ओम बिरला

बीते आम चुनावों के दिनों में भारत के विभिन्न राज्यों में चुनाव प्रचार के दौरान एक कार्यकर्ता के रूप में संगठन द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी का निर्वहन करते हुए देवतुल्य जनता जनार्दन द्वारा बरसाये आशीष, स्नेह व अपनत्व को शब्दों से परिभाषित नहीं किया जा सकता!

-भजनलाल शर्मा

प्रधानमंत्री मोदी ने हर योजना में मुस्लिम को रखा है, हमने कभी मुस्लिम विरोध नहीं किया है। चाहे पीएम किसान सम्मान निधि हो, गरीब कल्याण अन्न योजना हो, आवास योजना और आयुष्मान भारत योजना हो... हर योजना में हमारे मुसलमान भाई-बहन लाभार्थी हैं।

-जेपी नड्डा

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी की मिसाल

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान यह उन दिनों की बात है जब फ्रंटियर गांधी कहलाने वाले अब्दुल गफ्फार खां अविभाजित भारत की डेरा इस्माइल खान जेल में बंदी थे। उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिये सख्त जेल की सजा दी गई थी। उन्हें रोज बीस किलो गेहूं पीसने की सज़ा दी गयी थी।

यह उनके लिए बेहद कष्टकारी था। यदि वे ऐसे न कर पाते तो उनकी सजा और सख्त कर दी जाती। यह देखकर अनाज पीसने वाले विभाग के अंग्रेज अधिकारी को उन पर दया आ गई। उसने सुझाव दिया कि वे रोज बीस किलो गेहूं की बजाय दस किलो गेहूं तथा दस किलो आटा उनके पास भिजवा देंगे ताकि बड़े जेल अधिकारियों को लगे कि उन्होंने बीस किलो आटा पीस दिया है। लेकिन अब्दुल गफ्फार खां ने दस किलो आटा वापस लौटा दिया। उन्होंने अंग्रेज अधिकारी से कहा कि दस किलो गेहूं पीसने से बचने से मेरे शरीर को तो राहत मिल जाएगी, लेकिन मेरी आत्मा पर इस बेईमानी से पड़ने वाले दाग को कौन धो पाएगा?

सामयिक

कितने एग्जेक्ट पोल साबित होंगे एग्जिट पोल?

योगेश कुमार गोयल

मोबाइल : 9034304041.

अंतिम चरण के मतदान की प्रक्रिया के समापन के साथ ही तमाम टीवी चैनलों द्वारा विभिन्न सर्वे एजेंसियों के सहयोग से एग्जिट पोल का प्रसारण कर दिया गया। लगभग सभी एग्जिट पोल के अनुमानों के मुताबिक एनडीए कम से कम 350 सीटों के साथ लगातार तीसरी बार रिकॉर्ड बहुमत से सत्तासीन होने जा रहा है और इंडिया गठबंधन के 150 सीटों के आसपास सिमटने की भविष्यवाणी की गई है। तीन एग्जिट पोल तो ऐसे हैं, जिनमें भाजपा के एनडीए गठबंधन को 400 या उससे भी ज्यादा सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है जबकि इन्हीं तीनों एग्जिट पोल में से एक में कांग्रेस के इंडिया गठबंधन को अधिकतम 107, दूसरे में 139 और तीसरे में अधिकतम 166 सीटें मिलने का अनुमान है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 303 और उसके गठबंधन को कुल 353 सीटों पर जीत हासिल हुई थी जबकि कांग्रेस को 53 सीट और उसके सहयोगियों को 38 सीटें मिली थी यानी कांग्रेस गठबंधन केवल 91 सीटों पर ही विजयी रहा था। अब यदि ये एग्जिट पोल सही साबित होते हैं तो नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा गठबंधन जीत के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ते हुए तीसरी बार भी न केवल मजबूत सरकार बनाने में सफल होगा बल्कि मोदी चुनाव में जीत दिलाने के मामले में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की भी बराबरी कर लेंगे।

हालांकि यह अलग बात है कि अभी तक का एग्जिट पोल का इतिहास यही बताता है कि कई बार अधिकांश एग्जिट पोल वास्तविक चुनावी नतीजों से कोसों दूर नजर आते रहे हैं और शायद यही कारण है कि इस बार एनडीए के अधिकांश नेता भी एग्जिट पोल को लेकर यही कहते नजर आए हैं कि एग्जिट पोल हमेशा सटीक नहीं होते लेकिन हम इसका सम्मान करते हैं। इंडिया गठबंधन के तमाम नेता तो एग्जिट पोल के अनुमानों को सिरे से ही खारिज करते दिखाई दिए हैं। लगभग सभी टीवी चैनल भी एग्जिट पोल का प्रसारण करते समय बार-बार उल्लेख करते रहे कि ये केवल एग्जिट पोल हैं, एग्जेक्ट पोल नहीं। अब यह तो 4 जून को चुनाव परिणाम सामने आने के बाद स्पष्ट हो ही जाएगा कि इस बार के एग्जिट पोल सटीक साबित होते हैं या केवल हवा-हवाई। दरअसल पिछले कुछ चुनावों में कुछेक एग्जिट पोल के अनुमान भले ही काफी हद तक चुनाव परिणामों के करीब रहे हों लेकिन यह भी सच है कि कम से कम भारत में तो एग्जिट पोल का इतिहास ज्यादा सटीक नहीं रहा है।

वैसे तो एग्जिट पोल ओपिनियन पोल का ही हिस्सा होते हैं किन्तु ये मूल रूप से ओपिनियन पोल से अलग होते हैं। ओपिनियन पोल में मतदान करने और नहीं करने वाले सभी प्रकार के लोग शामिल हो सकते हैं। ओपिनियन पोल मतदान के पहले किया जाता है जबकि एग्जिट पोल चुनाव वाले दिन ही मतदान के तुरंत बाद किया जाता है। एग्जिट पोल से पहले चुनावी सर्वे किए जाते हैं और सर्वे में बहुत से मतदान क्षेत्रों में मतदान करके निकले मतदाताओं से बातचीत कर विभिन्न राजनीतिक दलों तथा प्रत्याशियों की हार-जीत का आकलन किया जाता है। अधिकांश मीडिया संस्थान कुछ प्रोफैशनल एजेंसियों के साथ मिलकर एग्जिट पोल करते हैं। ये एजेंसियां मतदान के तुरंत बाद मतदाताओं से यह जानने का प्रयास करती हैं कि उन्होंने अपने मत का प्रयोग किसके लिए किया है और इन्हीं आंकड़ों के गुणा-भाग के आधार पर यह जानने का प्रयास किया जाता है कि कहां से कौन हार रहा है और कौन जीत रहा है। इस आधार पर किए गए सर्वेक्षण से जो व्यापक नतीजे निकाले जाते हैं, उसे ही एग्जिट पोल' कहा जाता है। चूंकि इस प्रकार के सर्वे मतदाताओं की एक निश्चित संख्या तक ही सीमित रहते हैं, इसलिए एग्जिट पोल के अनुमान हमेशा सही साबित नहीं होते।

एग्जिट पोल सदैव मतदान प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही दिखाए जाते हैं। मतदान खत्म होने के कम से कम आधे घंटे बाद तक एग्जिट पोल का प्रसारण नहीं किया जा सकता। इनका प्रसारण तभी हो सकता है, जब चुनावों की अंतिम दौर की वोटिंग खत्म हो चुकी हो। मतदान से पहले या मतदान प्रक्रिया के दौरान एग्जिट पोल सार्वजनिक नहीं किए जा सकते बल्कि मतदान प्रक्रिया पूरी होने के आधे घंटे बाद ही इनका प्रकाशन या प्रसारण किया जा सकता है। यदि कोई चुनाव कई चरणों में भी सम्पन्न होता है तो एग्जिट पोल का प्रसारण अंतिम चरण के मतदान के बाद ही किया जा सकता है लेकिन उससे पहले प्रत्येक चरण के मतदान के दिन डेटा एकत्रित किया जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि एग्जिट पोल बढ़-चढ़कर किए जाने वाले अपने दावों में बहुत बार फेल क्यों साबित होते हैं? दरअसल एग्जिट पोल वास्तव में कुछ और नहीं बल्कि वोटर का केवल रूझान ही होता है, जिसके जरिये अनुमान लगाया जाता है कि नतीजों का झुकाव किस ओर हो सकता है। एग्जिट पोल के दावों का ज्यादा वैज्ञानिक आधार इसलिए भी नहीं माना जाता क्योंकि ये कुछ सौ या कुछ हजार हजार लोगों से बातचीत करके उसी के आधार पर ही तैयार किए जाते हैं। एग्जिट पोल में प्रायः मीडिया से आ रही खबरों, चुनाव का इतिहास और हवा के रूख का घालमेल भी शामिल रहता है। जब कोई मतदाता अपना मत देकर मतदान केन्द्र से बाहर निकलता है तो एग्जिट पोल कराने वाली एजेंसियां उससे उसका रूझान पूछ लेती हैं। अधिकतर एग्जिट पोल परिणामों को प्रायः समझ लिया जाता है कि ये पूरी तरह सही ही होंगे किन्तु ये केवल अनुमानित आंकड़े ही होते हैं और कोई जरूरी नहीं कि मतदाता ने सर्वे करने वालों को सच्चाई ही बताई हो।

दरअसल सर्वे के दौरान मतदाता बहुत बार इस बात का सही जवाब नहीं देते कि उन्होंने अपना वोट किस पार्टी या प्रत्याशी को दिया है। देश में चुनाव प्रायः विकास के नाम पर या फिर जाति-धर्म के आधार पर ही लड़े जाते रहे हैं और विधानसभा चुनावों में बहुत से स्थानीय मुद्दे भी हावी रहते हैं, ऐसे में यह पता लगा पाना आसान नहीं होता कि मतदाता ने अपना वोट किसे दिया है। दुनियाभर में अधिकांश लोग एग्जिट पोल को अब विश्वसनीय नहीं मानते और यही कारण है कि कई देशों में इन पर रोक लगाने की मांग होती रही है। बहरहाल, अब देखना यही है कि एग्जिट पोल आखिर कितने एग्जेक्ट पोल साबित होते हैं?

मुद्दा

युद्ध की विभीषिका से बच्चों को बचाएं

बाल मुकुन्द ओझा

यूनिसेफ के मुताबिक बच्चों के खिलाफ हिंसा न केवल उनके जीवन और स्वास्थ्य को,बल्कि उनके भावात्मक कल्याण और भविष्य को भी खतरे में डालती है। दुनिया के आधे से अधिक बच्चों ने गंभीर हिंसा को सहन किया हैं और इस तादाद के 64 प्रतिशत बच्चे दक्षिण एशिया में हैं। सभी बच्चों को हिंसा,शोषण और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रहने का अधिकार है। भारत में बच्चों के खिलाफ हिंसा अत्यधिक है और लाखों बच्चों के लिए यह कठोर वास्तविकता है।

आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस प्रत्येक वर्ष 4 जून को मनाया जाता है। यह दिवस सयुंक्त राष्ट्र द्वारा बच्चों के अधिकारों एवं जीवन-सुरक्षा से जुड़े प्रतिबद्धता को दर्शाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसकी शुरुआत 19 अगस्त 1982 को हुई थी। सैन्य मुठभेड़ में बच्चों पर सबसे बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस समय रूस यूक्रेन युद्ध अपने चरम पर है। इस युद्ध में बच्चे भी झुलस रहे है। हम दिवस जरूर मनाएं मगर जब वास्तविक विपदा आएं तो उसका भी मिलजुलकर सामना करें। यूक्रेन युद्ध की बात करें तो हम पाएंगे की बच्चे कभी युद्ध नहीं छेड़ते, लेकिन जब कभी युद्ध होता, बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। इस युद्ध के दौरान लाखों बच्चों को असीम पीड़ा झेलनी पड़ी है। शिक्षा से वंचित होने के साथ सैंकड़ों बच्चों ने न केवल अपने परिजनों को खो दिया अपितु बहुत से बच्चों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। आज सबसे ज्यादा जरुरत इस बात की है कि हम युद्ध की विभीषिका से बच्चों को बचाएं। तभी ऐसे दिवसों की सार्थकता सिद्ध होंगी।

बच्चों के कुपोषण, अनाथ बच्चों के संरक्षण, बालश्रम, गरीबी और भुखमरी, बाल विवाह तथा बच्चों की शिक्षा सहित अनेक स्तरों पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के दिवस वैश्विक स्तर पर मनाये जाते है। इसी कड़ी में दुनिया भर में हर साल 4 जून हिंसा का शिकार हुए मासूम बच्चों के वैश्विक दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत में चार करोड़ बच्चे घरेलू हिंसा के शिकार होकर अपने घरों से पलायन कर फुटपाथ या सड़क पर रहने को मजबूर हैं। घरेलू हिंसा से प्रताड़ित होकर यह मासूम अपने घरों को छोड़ देते हैं और फिर इनकी जिंदगी नरक से कम नहीं होती है। घरेलू हिंसा के शिकार हजारों बच्चे घर छोड़ने के बाद पटाखे बनाना, कालीन बुनना, वेल्डिंग करना, ताले बनाना, पीतल उद्योग में काम करना, कांच उद्योग, हीरा उद्योग, माचिस, बीड़ी बनाना, खेतों में काम करना, कोयले की खानों में, पत्थर खदानों, सीमेंट उद्योग, दवा उद्योग तथा होटलों व ढाबों में झूठे बर्तन धोना आदि सभी काम मालिक की मर्जी के अनुसार करने होते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम कागजी कार्यवाही और भाषणबाजी से ऊपर उठकर धरातल पर आकर यथार्थ में बच्चों पर अत्याचार और हिंसा को सख्ती से रोके और उनके अधिकारों को संरक्षित कर विकास की योजनाओं को अमली जामा पहनाएं ताकि उनके चेहरे पर मुस्कान आ सके।

नजरिया

नई मोदी सरकार का पहला टारगेट पीओके पर कब्जा होगा?

अशोक मधुप

मोबाइल: 9675899803

देश का मिजाज और एग्जिट पोल की तस्वीर बता रही है कि लोकसभा चुनाव-2024 के लिए भी 'नरेंद्र मोदी' को फिर प्रचंड जनादेश मिल रहा है। तीसरी बार भी देश के प्रधानमंत्री के पद को नरेंद्र मोदी सुशोभित करेंगे। इस चुनाव में कश्मीर से कन्याकुमारी तक 'नरेंद्र मोदी' के खिलाफ इंडी अलायंस का गला फाडकर चिल्लाना कोई करिश्मा नही कर सका। इंडी अलायंस औंधे मुंह धड़ाम हो गया है। पूरे चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विपक्षी इंडी गठबंधन का निशाना रहे। इंडी अलायंस ने गला फाड़ फाड़ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आरोप लगाए। देश की सुरक्षा को प्रभावित करने वाले मुद्दे भी उठाए।किंतु जनता का रुझान कहता है कि उसने इन सब को नकार दिया। प्रधानमंत्री का अबकि बार चार सौ सीट का दावा भले ही पूरा न हो किंतु ये निश्चित है कि केंद्र में भाजपा पूर्ण बहुमत से सरकार बना रही है।

इस बार सरकार के सामने भले की आंतरिक मुद्दा भ्रष्टाचार से निपटना हो किंतु इस बार भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति की भी परीक्षा होगी। अलग तरह की चुनौती उसके सामने होगी।इस चुनाव में भाजपा के नेताओं ने देश भक्ति को धार देने का प्रयास किया।प्रचार के दौरान पाकिस्तान अधिकृत कशमीर को मुक्त कराने का मुद्दा बार बार उभारा गया।

चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सिपहसालार कहते घूमते रहे हैं कि सरकार बनी तो पाक अधिकृत कश्मीर पर भारत का कब्जा होगा। शहरी निकाय मंत्री कमल गुप्ता हरियाणा के रोहतक में व्यापारियों द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में कहा कि कि आने वाले दो-तीन साल में किसी भी क्षण पाक अधिकृत कश्मीर भारत में शामिल हो सकता है। विदेश मंत्री जयशंकर ने भी एक बयान में पीओके को लेकर भारत के दावे को दोहराया था। चार अप्रैल को मीडिया से बात करते हुए जयशंकर ने कहा था, हम कभी भी ये स्वीकार नहीं करेंगे कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भारत का अभिन्न अंग नहीं है। सेरामपुर पश्चिम बंगाल में एक रैली को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद अशांत कश्मीर में शांति लौट आई है, लेकिन पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर अब आजादी के नारों और विरोध प्रदर्शनों से गूंज रहा है।उन्होंने कहा, सरकार द्वारा 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद कश्मीर में शांति लौट आई है। लेकिन अब हम पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में विरोध प्रदर्शन देख रहे हैं। पहले यहां आजादी के नारे लगते थे, अब वही नारे पीओके में लगते हैं। पहले यहां पत्थर फेंके जाते थे, अब पीओके में पत्थर फेंके जाते हैं।उन्होनें कहा कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत का है और हम उसे लेकर रहेंगे ।

योगी आदित्यनाथ तो सबसे आगे बढ़ गए। उन्होंने पाकिस्तान को निशाने पर लेते हुए कहा कि आज उसके लिए पीओके को भी बचाना मुश्किल हो रहा है। उन्होंने कहा कि चुनाव के बाद मोदी जी को तीसरे कार्यकाल पर बोलते हुए योगी आदित्यनाथ ने पाकिस्तान को निशाने पर लेते हुए कहा कि आज पाकिस्तान के लिए पीओके को भी बचाना मुश्किल हो रहा है. उन्होंने कहा कि मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने दीजिए, अगले छह महीने के अंदर 'पाक अधिकृत कश्मीर' भारत का हिस्सा होगा।अब तक भारत विदेशों में बैठे भारत के आंतकियों की मौत पर चुप्पी साधे था।अपने पर आरोप लगने पर भारत का कहना था कि इनमें उसका हाथ नही है, किंतु योगी आदित्यनाथ ने कहा, ब्रिटेन के एक बड़े समाचार पत्र ने लिखा कि पाकिस्तान के अंदर पिछले तीन वर्ष के अंदर जितने बड़े दुर्दांत आतंकवादी थे, वे एक-एक करके मारे गए। मारने वालों में भारत की एजेंसी का हाथ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, भई अब जो हमारे दुश्मन है, हम उसकी पूजा थोड़ी करेंगे। कोई हमारे लोगों को मारेगा तो हम उसको पूजेंगे नहीं भई, हम भी वो ही करेंगे जिसका वो हकदार है।

असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि हमें 400 सीट इसलिए चाहिए ताकि पीओके ले सकें। हिमंता बिस्वा सरमा ने दिल्ली में प्रचार करते हुए कहा कि कांग्रेस पूछती है कि 400 सीट क्यों चाहिए। उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस का शासन था तब हमें बताया गया था कि एक तरह से कश्मीर भारत में भी है पाकिस्तान में भी है। हमारी संसद में कभी इसकी चर्चा नहीं होती थी कि जो कश्मीर पाकिस्तान के साथ है वह पाक अधिकृत कश्मीर है। वहां लोग भारत का तिरंगा हाथ में लेकर आंदोलन कर रहे है पाकिस्तान के खिलाफ। उन्होंने कहा कि यह शुरुआत है। मोदी जी को 400 सीट मिलेगी तो पाक अधिकृत कश्मीर भी भारत का ही हो जाएगा और इसका आगाज हो चुका है।इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी कह चुके हैं कि जिस तरह से कश्मीर में शांति लौटी है और आर्थिक प्रगति हो रही है, पीओके के लोग खुद ये मांग करेंगे कि उन्हें भारत में विलय कर लिया जाए। विदेश मंत्री एस.जयशंकर ने भी कहा कि पीओके भारत का अंग था है और हमेशा रहेगा।

भाजपा के सिपहसालार की पाक अधिकृत कश्मीर पर चुनाव प्रचार के दौरान कब्जे की बात करते रहे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पर चुप्पी साधे रखी।किंतु कांग्रेस के मणिशंकर अय्यर, और जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुख अब्दुल्ला के ये कहा कि भाजपायी पाक अधिकृत कश्मीर पर कब्जे की बात कर रहे हैं। पाकिस्तान ने चूड़ी नही पहन रखी। पाकिस्तान के पास एटम बम है। अब तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस मसले पर चुप्पी साधे थे।किंतु पाकिस्तान ने चूडी नही पहन रखीं, पर उन्होंने जरूर कहा कि कांग्रेसी और कुछ विपक्षी नेता कह रहे हैं कि पाकिस्तान ने चूड़ी नही पहन रखीं तो उसे पहना दी जाएंगी। प्रधानमंत्री के इस कथन से साफ होता है कि उनके सिपहसालारों के पाक अधिकृत कश्मीर पर कब्जे की घोषणा उनकी अपनी नही है। यह कहीं केंद्रीय नेतृत्व में पक रहा है और सरकार बनने पर वह इस पर कार्रवाई कर सकता है।

भारत के दावे को पाकिस्तान के कार्ट की हाल की इस कार्रवाई से और बल मिला है।इसमें पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया है कि पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर (पीओके) एक विदेशी क्षेत्र है। मशहूर कश्मीरी कवि अहमद फरहाद शाह के अपहरण मामले में इस्लामाबाद हाईकोर्ट में पाकिस्तानी सरकार ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है। मशहूर कश्मीरी कवि और पत्रकार अहमद फरहाद शाह के अपहरण मामले में पाकिस्तान के अतिरिक्त अटॉर्नी जनरल की ओर से शुक्रवार को यह कबूलनामा सामने आया ।इस्लामाबाद की अदालत में अहमद फरहाद शाह के मामले की सुनवाई हो रही है।

शाह का 15 मई को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ने रावलपिंडी स्थित उनके घर से अपहरण कर लिया था। उनकी पत्नी ने इस संबंध में याचिका दायर की थी।इस्लामाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस मोहसिन अख्तर कयानी ने कवि की पत्नी की याचिका पर फरहाद शाह को अदालत में पेश करने का आदेश दिया।पाकिस्तान टुडे की रिपोर्ट के अनुसार, इस पर पाकिस्तान के अतिरिक्त अटॉर्नी जनरल ने जस्टिस कयानी की अदालत में दलील दी कि कवि फरहाद शाह पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में पुलिस हिरासत में हैं और उन्हें इस्लामाबाद हाईकोर्ट के सामने पेश नहीं किया जा सका।एआईआर की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस कयानी ने जवाब दिया कि यदि पीओके एक विदेशी क्षेत्र है, तो पाकिस्तानी सेना और पाकिस्तानी रेंजर्स उस जमीन में कैसे घुस गए?सुनवाई के दौरान जस्टिस कयानी ने लोगों के जबरन अपहरण की प्रथा जारी रखने के लिए पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों की आलोचना की।कवि और पत्रकार अहमद फरहाद शाह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और वहां के लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले एक मानवाधिकार कार्यकर्ता भी हैं। उन्हें उस पाकिस्तान आर्मी की कड़ी आलोचना के लिए जाना जाता है। उन्होंने कई बार पीओके में कई सरकार विरोधी प्रदर्शनों का नेतृत्व किया और उनमें भाग लिया।

चार जून को परिणाम आ जांएगे ।जैसी की एकजिट पोल के दावें हैं कि केंद्र में पूर्ण बहुमत से भाजपा की सरकार बन जाएगी।इसके बाद देखना है कि चुनाव के दौरान पाक अधिकृत कश्मीर पर भारत के कब्जे की घोषणा के लिए नई सरकार क्या करती है या केवल गाल बजाकर भाजपा के सिपहसालारों ने पाकिस्तान को फालतू में चौकन्ना कर दिया। वह पाक अधिकृत कश्मीर में अब चीन की मदद से ऐसे बंकर बना रहा है, जहां बम या मिजाइल का असर नही हो सकता।

महत्त्वपूर्ण

Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company,6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**, (*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**RNI No. 58061/93. Regn No.: RNP/KA/BGS/2050/2015-2017 posted at Bengaluru PSO Mysore Road Bengaluru-560 026**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।– **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

दौरा

पुडुचेरी के राज्यपाल सी पी राधाकृष्णन ने सोमवार को रंगा रेड्डी जिले में चिलकुरु बालाजी मंदिर का दौरा किया।

क्या मोदी करेंगे नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी?

नई दिल्ली/भाषा

चार जून यानी मंगलवार को सुबह लोकसभा चुनाव के लिए मतगणना की शुरुआत होने के साथ ही धीरे-धीरे रुझान सामने आने लगेंगे और फिर अपराह्न होते-होते लगभग यह स्पष्ट हो जाएगा कि क्या मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में आकर देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकार्ड की बराबरी कर लेंगे या फिर साल 2004 की तरह ही कुछ ऐसे चौंकाने वाले नतीजे सामने आएंगे, जिसकी उम्मीद विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन कर रहा है।

ज्यादातर 'एग्जिट पोल' इस बात की तस्दीक कर रहे हैं कि इन चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का पलड़ा भारी है। इसके अलावा कुछ विशेषज्ञों का यह भी मानना रहा है कि सत्तारूढ़ गठबंधन के लिए दांव पर यही है कि उसकी जीत कैसी होती है और किन-किन नए क्षेत्रों में वह अपने पैर पसार पाती है, जबकि राष्ट्रीय क्षितिज पर लगातार कमजोर होते जा रहे विपक्ष के लिए इस चुनाव में सब कुछ दांव पर लगा हुआ है। अंतिम चरण के मतदान के बाद ज्यादातर 'एग्जिट पोल' के पूर्वानुमानों में राजग गठबंधन को 400 पार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के करीब दिखाया गया है, वहीं 'इंडिया' गठबंधन के लिए 180 सीटों के आंकड़े तक पहुंचने का अनुमान जताया गया है।

अतीत में जाकर हम देखें तो चुनावी फैसलों को सभी राजनीतिक दलों द्वारा स्वीकार किया गया है, हालांकि कभी भी निर्वाचन आयोग पर ऐसे गंभीर आरोप नहीं लगे जैसा कि इस बार के चुनाव में विपक्षी दलों ने उस पर लगाए हैं।

मतगणना से पहले, एग्जिट पोल में सत्तारूढ़ गठबंधन की भारी जीत का पूर्वानुमान व्यक्त किये जाने के बाद सत्ता पक्ष और विपक्षी खेमों के बीच आरोप- प्रत्यारोप का दौर भी शुरु हो गया है। कड़वाहट भरे लोकसभा चुनाव प्रचार अभियान के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 'एक्जिट पोल' को 'मोदी मीडिया पोल' कहकर सरसरी तौर पर खारिज कर दिया है।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर संदेह जताते रहे 'इंडिया' गठबंधन के नेताओं ने प्रधानमंत्री पर इन 'काल्पनिक' 'एग्जिट पोल' के जरिए नौकरशाही को संकेत भेजने का आरोप लगाया और मतगणना संबंधी दिशानिर्देशों का पालन करने का आग्रह करते हुए निर्वाचन आयोग का दरवाजा खटखटाया।

अपने जवाबी हमले में, भाजपा ने अपने प्रतिद्वंद्वियों पर भारत की चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता पर सवाल उठाने का आरोप लगाया है और आयोग से मतों की गिनती के दौरान 'हिंसा और अशांति' के किसी भी प्रयास को रोकने के लिए कहा है।

बहरहाल, अब तो नतीजे ही बताएंगे कि क्या 2014 के बाद से देशभर में लगातार कमजोर होती जा रही कांग्रेस के संगठन और नेतृत्व में भाजपा को चुनौती देने की क्षमता है। लगातार दो लोकसभा चुनावों में वह मुख्य विपक्षी दल का दर्जा पाने तक में भी विफल रही है और वह कुछ राज्यों तक सिमट कर रह गई है।

पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और मुख्य प्रचारक राहुल गांधी समेत पार्टी नेताओं ने दावा किया है कि 543 सदस्यीय लोकसभा में उनके गठबंधन को 295 सीटें मिलेंगी और इसके साथ ही मोदी युग का अंत हो जाएगा।

'इंडिया' गठबंधन के नेताओं का दावा है कि उनका गठबंधन जन कल्याण को केंद्र में रखकर और संविधान व आरक्षण पर कथित खतरे के इर्द-गिर्द चुनावी विमर्श को आकार देने में सफल रहा और उसे जनता का समर्थन मिलेगा।

भाजपा अगर सत्ता में आती है, तो मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के उस रिकॉर्ड की बराबरी कर लेंगे, जिसमें उन्होंने अपनी पार्टी को लगातार तीन चुनावी जीत दिलाई थी। अगर वह विफल होते हैं, तो वह रिकॉर्ड से चूक जाएंगे।

विपक्षी दलों ने इस चुनाव में अक्सर यह दलील दी है कि साल 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजे 2004 के तर्ज पर आएंगे।

वास्तविक मुद्दों से भटकाता है सोशल मीडिया

ब्रिसबेन/भाषा

प्रस्तावित सोशल मीडिया प्रतिबंध हमें इस वास्तविक मुद्दे से भटका रहे हैं कि डिजिटल अनुभवों को बच्चों के लिए बेहतर कैसे बनाया जाए। पूरे ऑस्ट्रेलिया में सरकारें अधिकार क्षेत्र के आधार पर 14 या 16 साल की आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव दे रही हैं।

प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने इस कदम का समर्थन किया है। संघीय सरकार ने उम्र सत्यापन प्रौद्योगिकी के परीक्षण के लिए 65 लाख ऑस्ट्रेलियाई डॉलर निवेश करने की प्रतिबद्धता जतायी है।

लेकिन ये प्रतिबंध बच्चों को इस बात पर चर्चा करने से रोक सकते हैं कि वे अपने जीवन में विश्वसनीय वयस्क लोगों के साथ ऑनलाइन मंचों का उपयोग कैसे कर रहे हैं और इससे बाद में सोशल मीडिया का छिप-छिपकर इस्तेमाल करने का जोखिम पैदा हो सकता है।

ऐसी घोषणाएं हमें उस बातचीत से विचलित कर देती हैं जो हमें वास्तव में करने की आवश्यकता है, मसलन- हम बच्चों और युवाओं के लिए सोशल मीडिया को बेहतर कैसे बना सकते हैं ताकि उन्हें ऑनलाइन सुरक्षित, खोजपूर्ण, मज़ेदार, मनोरंजक, सकारात्मक और शैक्षिक अनुभव मिलें?

सोलह साल की आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने के लिए हाल में चलाए गए एक अभियान के बारे में एक रेडियो साक्षात्कार में अल्बनीज ने कहा, ''हम चाहते हैं कि हमारे ऑस्ट्रेलियाई बच्चे बाहर खेलें, सामान्य तरीके से एक-दूसरे के साथ संवाद में अधिक समय व्यतीत करें और ऑनलाइन कम समय व्यतीत करें। ऐसा करने का एक तरीका सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाना है।'' ''माता-पिता को डिजिटल प्रौद्योगिक के इस्तेमाल को प्रतिबंधित करना चाहिए'', यह रुख परिवारों पर जिम्मेदारी का बोझ डाल रहा है जो कि अनुचित है।

एक ऐसे भविष्य की कल्पना कीजिए जहां अभिभावकों के नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि बच्चों के लिए डिजिटल अनुभव इतने अच्छे तरीके से बनाए गए हों। इंटरनेट को बच्चों को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया लेकिन कुछ तरीकों में बदलाव किया जा सकता है। इसका एक तरीका उम्र के उपयुक्त डिजाइन और पहुंच है।

उदाहरण के लिए पांच साल के बच्चे का इंटरनेट पर अनुभव 12 साल, 14 साल और 17 साल के बच्चे से अलग होगा।

एक समाज के तौर पर हमारा लक्ष्य बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता के डिजिटल उत्पाद और सेवाएं बनाना है जिसमें सोशल मीडिया शामिल हो सकता है जो उम्र के उपयुक्त अनुभव उपलब्ध कराए।

उम्र सत्यापन परीक्षण 16 साल तक की आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने से जुड़ा हुआ है, जिससे युवा लोगों के ऐसा महसूस करने का खतरा है कि उन्हें हमारी डिजिटल दुनिया में भविष्य के लिए शिक्षित करने के बजाए दंडित किया जा रहा है।

फिल्म 'पुष्पा 2 द रूल' का नया पोस्टर रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

दक्षिण भारतीय फिल्मों के जानेमाने अभिनेता अल्लू अर्जुन और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना की आने वाली फिल्म 'पुष्पा 2 द रूल' का नया पोस्टर रिलीज हो गया है। अल्लू अर्जन की फिल्म 'पुष्पा 2 द रूल' इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। मेकर्स ने अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना अभिनीत इस फिल्म का नया पोस्टर जारी किया है,और कैप्शन में लिखा है, 75 दिन बाकी हैं पुष्पा राज के रूल के लिए। उनका रूल भारतीय सिनेमा में एक नया अध्याय लिखेगा।नए पोस्टर में अल्लू अर्जन अपने कांधे पर राइफल लेकर लुंगी पहने देखे जा सकते हैं। 'पुष्पा 2: द रूल' 15 अगस्त, 2024 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। सुकुमार द्वारा निर्देशित और मैथरी मूवी मेकर्स द्वारा निर्मित इस फिल्म में अल्लू अर्जुन, रश्मिका मंदाना के अलावा फहद फासिल भी लीड रोल में हैं।

रवीना टंडन के सपोर्ट में उतरीं कंगना रानौत, कहा- 'घटना में शामिल लोगों को सजा मिलनी चाहिए'

मुंबई/एजेन्सी

इन दिनों बॉलीवुड एक्ट्रेस रवीना टंडन का एक वीडियो जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में कुछ महिलाओं ने उन पर हमला करने का आरोप लगाया है, जो बाद में गलत साबित हुआ। क्लिप में रवीना पर कुछ महिलाओं ने हमला किया जबकि वह कह रही हैं, 'धक्का मत दो, प्लीज मुझे मत मारो।' पुलिस जांच में पता चला कि रवीना पर लगे आरोप झूठे हैं।

इस मामले ने जमकर सुर्खियां बटोरी, जिसके बाद रवीना के सपोर्ट में कंगना रनौत सामने आयी हैं। कंगना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा. रवीना टंडन जी के साथ जो हुआ वह बेहद चिंताजनक है, अगर उनसे भिड़ने वाले समूह में 5-6 और लोग होते तो उन्हें पीट-पीटकर मार दिया जाता।

एक्ट्रेस ने कहा कि इसमें शामिल लोगों को सजा मिलनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा, हम इस तरह की

रोड रेज जैसी घटनाओं की निंदा करते हैं। उन लोगों को सजा मिलनी चाहिए। उन्हें इस तरह की हिंसा और दुर्व्यवहार के लिए सजा जरूर मिलनी चाहिए। वर्कफ्रंट की बात करें तो रवीना टंडन को पिछली बार 'पटना शुक्ला' में देखा गया था। इस फिल्म में उन्होंने एक वकील का किरदार निभाया था। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज है।

'हीरामंडी' का दूसरा सीजन लेकर आ रहे संजय लीला भंसाली

मुंबई/एजेन्सी

मल्टीस्टारर पीरियड ड्रामा स्ट्रीमिंग सीरीज 'हीरामंडी: द डायमंड बाजार' को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल 'हीरामंडी' अपने दूसरे सीजन के साथ वापसी के लिए तैयार है। फिल्म मेकर संजय लीला भंसाली ने इस सीरीज के जरिए ओटीटी डेब्यू किया था।

सीरीज में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वेश्याओं की दुनिया को दिखाया गया है। सीरीज 1 मई को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम की गई। इसमें अदिति राव हैदरी, मनीषा कोइराला, ऋचा चड्ढा, शर्मिन सहगल, संजीदा शेख और सोनाक्षी सिन्हा एक साथ नजर आयीं। सीरीज के पहले सीजन को विजुअल, स्टोरीटेलिंग और म्यूजिक के लिए काफी सराहा गया। भंसाली ने 'हीरामंडी: द डायमंड बाजार' की सफलता के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा, मैं 'हीरामंडी: द डायमंड बाजार' को मिले प्यार और सराहना को देख बेहद खुश हूं। यह देखकर अच्छा लगता है कि शो दुनिया भर के दर्शकों के बीच लोकप्रिय हो रहा है और मैं नेटफ्लिक्स से बेहतर साथी की उम्मीद नहीं कर सकता था। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि हम 'सीजन' 2 के साथ वापस आ रहे हैं।'' 'हीरामंडी' का दूसरा सीजन जल्द ही नेटफ्लिक्स पर आएगा।

'श्रीमद रामायण' में दिखायी जाएगी रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की कहानी

मुंबई/एजेन्सी

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न के शो 'श्रीमद रामायण' में रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की कहानी दिखायी जायेगी। सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न की दिव्य गाथा 'श्रीमद रामायण' की जारी कहानी में, भगवान श्री राम की वानर-सेना लंका तक पहुंचने के लिए राम सेतु पुल का निर्माण करना शुरू करती है, लेकिन इस ऐतिहासिक यात्रा पर निकलने से पहले, भगवान राम ने भगवान शिव की पूजा करने की इच्छा की, और भगवान राम ने समुद्र के किनारे प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों में से एक की स्थापना करके इस भूमि को धन्य कर दिया। इस पवित्र स्थल का नाम रामेश्वरम रखा गया और यह पीढ़ियों से भक्तों का पूजनीय तीर्थस्थल रहा है।

आसन्न युद्ध की तैयारियों के बीच, राजा रावण का पुत्र मेघनाद, भगवान राम के मिशन को विफल करने के लिए रणनीति बनाता है और राक्षसों की एक सेना भेजता है। ये राक्षसी शत्रु विकट चुनौती पेश करते हैं और भगवान राम व उनके समर्पित भक्तों की दृढ़ता और वीरता की परीक्षा लेते हैं।

मेघनाद के किरदार का प्रभावशाली चित्रण करने वाले अभिनेता रुशिराज पवार ने अपना नज़रिया पेश करते हुए कहा, यह कहानी हर किरदार की भावनाओं और दृष्टिकोणों को खूबसूरती से दर्शाती है, जिसमें एक तरफ, भगवान राम माता सीता को बचाने के लिए दृढ़संकल्पित हैं और दूसरी तरफ, एक कर्तव्यनिष्ठ पुत्र मेघनाद अपने पिता और उनके राज्य की रक्षा करने के दृढ़संकल्प के साथ हर कदम उठाने के लिए तैयार है। 'श्रीमद रामायण' हर सोमवार से शुक्रवार रात 9:00 बजे, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न पर प्रसारित होता है।

बालू पालवंकर के जीवन पर आधारित फिल्म में काम करेंगे अजय देवगन

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड के सिंघम स्टार अजय देवगन देश के प्रथम दलित क्रिकेटर बालू पालवंकर के जीवन पर आधारित फिल्म में काम करते नजर आयेंगे। बॉलीवुड फिल्मकार तिग्मांशु धूलिया ,क्रिकेट की पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म बनाने जा रहे है।यह फिल्म देश के प्रथम दलित क्रिकेटर माने वाले बालू पालवंकर और उनके भाइयों की कहानी पर्दे पर दिखाएगी। फिल्म की पटकथा लेखक और इतिहासकार रामचंद्र गुहा द्वारा लिखित किताब ए कार्नर आफ ए फारेन फील्ड पर आधारित होगी। इस फिल्म में अजय देवगन काम करते नजर आयेंगे। फिल्म क्रिटिक तरण आदर्श ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा,अजय देवगन भारत के पहले दलित क्रिकेटर पालवंकर बालू की बायोपिक में नजर आएंगे। तिग्मांशु धूलिया इसे बनायेंगे। बताया जा रहा है कि फिल्म 'सिंघम अगेन' की शूटिंग के बाद अजय देवगन इस बायोपिक पर काम शुरू करेंगे। बताया जा रहा है कि अजय देवगन भी इसे प्रोड्यूस कर रहे हैं।

फिल्म 'शुभ मंगल सावधान' का ट्रेलर रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

विक्टर एंटरटेनमेंट प्रस्तुत सुपरस्टार प्रदीप पांडेय चिंटू की आने वाली भोजपुरी फिल्म शुभ मंगल सावधान का ट्रेलर रिलीज हो गया है। फिल्म शुभ मंगल सावधान के निर्माता विक्टर राघव (विक्की) और संदीप छारी हैं, जबकि फिल्म का निर्देशन सुजीत कुमार सिंह ने किया है। फिल्म का ट्रेलर वेब म्यूजिक के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल से रिलीज हुआ है। इस फिल्म की मुख्य भूमिका में प्रदीप पांडेय चिंटू के साथ संयोगिता की केमिस्ट्री लाजवाब नजर आ रही है, जबकि फिल्म में यामिनी सिंह भी एक महत्वपूर्ण किरदार में नजर आने वाली हैं।

फिल्म शुभ मंगल सावधान में प्रदीप पांडेय चिंटू, संयोगिता और यामिनी सिंह के साथ आस्था सिंह, देव सिंह, बृजेश त्रिपाठी और लोटा तिवारी मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं। फिल्म की कहानी वीरू ठाकुर ने लिखी है।इस फिल्म का संगीत झा, छोटे बाबा और प्रकाश बारूद ने दिया है।डीओपी गोला लिंगा बाबू यादव हैं। एडिटर दीपक जौल हैं।

फिल्म के गानों के लिरिक्स प्यारेलाल कवि जी, राकेश निराला, उमा लाल यादव, प्रकाश बारूद और छोटू यादव ने लिखे हैं।एक्शन एस मल्लेश का है। कोरियोग्राफी कानू मुखर्जी ने की है। एसोसिएट डायरेक्टर राहुल द्विवेदी हैं और एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर प्रशांत द्विवेदी हैं।

स्टॉक मार्केट ट्रेडिंग सीखते वक्त आया शो 'बादल पे पांव है' का आइडिया : सरगुन मेहता

मुंबई/एजेन्सी

अपकमिंग सीरियल 'बादल पे पांव है' की निर्माता सरगुन मेहता ने शो के यूनीक कॉन्सेप्ट के बारे में कहा कि स्टॉक मार्केट में ट्रेडिंग करने वाली महिला के ऊपर पहली बार किसी शो की कहानी बनाई गई है। सरगुन ने कहा, मैं बहुत लंबे समय से स्टॉक मार्केट ट्रेडिंग सीखना चाहती थी, और मेरे सभी दोस्त, मेरे पापा, मेरे भाई और यहां तक कि अब मेरी भाभी भी स्टॉक ट्रेडिंग करते हैं। जब मैं स्टॉक के बारे में सीख रही थी, तब यह आइडिया मेरे दिमाग में आया और मैं सोचने लगी कि मैं यह क्यों करना चाहती हूं और किस तरह के लोग स्टॉक मार्केट में ट्रेडिंग करते हैं।''

उन्होंने कहा, तभी बानी का किरदार मेरे दिमाग में आया। यह न केवल मेरे सभी शो से अलग है, बल्कि यह सभी टीवी शो से भी अलग है। सबसे पहले, यह पूरी तरह से एक अलग दुनिया है। लंबे समय तक, महिलाएं केवल सिलाई या खाना पकाने का काम करती थीं क्योंकि उनके लिए करियर के ऑप्शन कम थे। इसलिए, उनमें जो भी स्किल थी, उन्होंने जो कुछ भी सीखा.. उसे करियर में बदल दिया।''

सरगुन ने कहा, ''लेकिन आज की पीढ़ी किसी खास हुनर ङ्कसे बंधी नहीं है। उन्होंने अपने लिए करियर के नए रास्ते खोल लिए हैं। आज महिलाएं हर काम कर रही हैं, तो फिर शेयर बाजार में ट्रेडिंग क्यों नहीं।'' एक्ट्रेस अमनदीप सिद्धू द्वारा निभाए गए बानी के किरदार को लेकर सरगुन ने कहा, ''इस किरदार की परिकल्पना काफी हद तक इस बात पर आधारित है कि मेरी परवरिश कैसे हुई है और मेरी मां कैसी हैं। हम ऐसे लोग हैं जो वाकई बड़े सपने देखते हैं। इसलिए, यह शो ऐसी लड़की की कहानी है जो उन सबसे सवाल कर रही है जो कहते हैं कि 'यही हमारी किस्मत है, और हम इसी में खुश हैं'। वह उस सामाजिक मानदंड को चुनौती देती है। बानी के किरदार के लिए अमनदीप सिद्धू को चुनने पर सरगुन ने कहा, जब हमने अमनदीप का पहला ऑडिशन देखा तो मैं तुरंत उससे कनेक्ट हो गई। जब हमने उनके साथ मॉक शूट किया तो मेरे डायरेक्टर और मैं उन्हें चुनने के लिए 100 प्रतिशत राजी हो गए। हालांकि, मैं तब तक अमनदीप से नहीं मिली थी। लेकिन जब मैं पहली बार उससे मिली और उसे कुछ सीन सुनाए, तो मैंने उसकी आंखों में एक अलग चमक देखी।

सरगुन ने कहा, ''उसने मुझे अपनी जिंदगी के कई ऐसे किस्से बताए जहां वह बिल्कुल बानी की तरह थी। उस पल, मुझे यकीन हो गया कि वह बानी ही है। अमनदीप बानी के बहुत करीब थी और मुझे लगता है कि वह बस इस किरदार को अपनाने का इंतजार कर रही थी।'' 'बादल पे पांव है' 10 जून से सोनी सब पर प्रसारित होगा।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com
बेंगलूरु | मंगलवार | 04-06-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY
RNI No. 58061/93. Regn No.: RNP/KA/BGS/2050/2018-2020
Posted at Bengaluru PSO
Mysore Road Bengaluru-560 026.

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलूरु द्वारा रविवार को सेवा के नूतन उपक्रम आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का शुभारंभ किया राजाजीनगर क्षेत्र में जैन संस्कार विधि से किया गया।

बीबीयूएल विद्यालय ने दसवीं के मेधावी विद्यार्थियों का किया सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। महावीर जैन शिक्षक संघ द्वारा संचालित बीबीयूएल जैन विद्यालय में सोमवार को वर्ष 2023-2024 में उत्तीर्ण हुए दसवीं के छात्रों को बधाई दी गई तथा सम्मान किया गया। संघ के अध्यक्ष चम्पालालजी भंडारी, उपाध्यक्ष हेमराज मन्नु, सचिव चम्पालाल जैन(वसंत),सहसचिव चम्पालाल दांतेवाडियां, सदस्य किशोर जैन ने एवं स्कूल की प्राचार्या अनीता कश्यप व उपप्राचार्या वाणी बीएल ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रोत्साहित किया। ज्ञातव्य है कि बीबीयूएल विद्यालय के दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा रहा।

इस वर्ष 30 से अधिक विद्यार्थियों ने 80% से ज्यादा अंक प्राप्त किए। सभी उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को स्मृति चिन्ह के रूप में उपहार भेंट किए गए।

उत्साहवर्धन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बेंगलूरु के जैन दोस्ती फेडरेशन द्वारा राजाजीनगर स्थित रैश अरेना में आयोजित बॉक्स क्रिकेट प्रतियोगिता 'बाफना कप 2024' के उद्घाटन समारोह में खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के 'कौटिल्य 2.0' में व्यापार, अध्यात्म व निवेश पर हुई चर्चा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में बेंगलूरु शाखा द्वारा 'कौटिल्य 2.0-ग्लोबल प्रोफेशनल एक्सिलेंस कॉन्क्लेव 2024' का आयोजन टाउन हॉल में किया गया। उपाध्यक्ष संजय सुराणा ने सभी का स्वागत किया। टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हिम्मत मांडोत, दक्षिण क्षेत्र के अध्यक्ष मोहित बैद,बेंगलूरु अध्यक्ष हितेश गिरिया ने अपने विचार व्यक्त किये । वक्ता के रूप में अरविंद मंडोत ने अध्यात्मिकता विषय पर, गणेश कृष्णन ने व्यापार के बदलते मॉडल और गजेंद्र कोठारी ने शेयर मार्केट निवेश पर अपनी प्रस्तुति दी। पैनल डिस्कशन में आदिश्वर इंडिया के प्रबंध निदेशक पारसमल भंडारी, वाउंस के सीईओ विवेकानन्द हब्बेकेरे, गुरु पुनवानी के प्रबंध निदेशक संजय बैद ने भाग लिया तथा अपने अनुभव साझा किए। संजय धारीवाल ने मॉडरेटर के रूप में अपनी सेवाएं दी। कार्यक्रम में टीपीएफ के राष्ट्रीय व दक्षिण क्षेत्र के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। सदस्य राहुल डागा, तृप्ति सुराणा एवं सूरज जैन ने नेटवर्किंग एक्टिविटी के माध्यम से सभी का मनोरंजन किया। डिंपल , वर्षा जैन, दिव्या जैन एवं गौरव कोठारी ने संचालन किया। मंत्री पीयूष डागा ने धन्यवाद दिया। संयोजक संजय सुराणा एवं पुष्पराज चोपड़ा

मानव सेवा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

मैसूरु के रोटरी कृत्रिम पाँव शिविर मे पाँच जरूरतमंदों को कृत्रिम पाँव वितरित किए गए। शिविर में रोटरी मैसूर के अध्यक्ष अरुण बेलवाडी, सामाजिक सेवा निदेशक गौतम सालेचा, टेक्नीशियन सुंदरेशन एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

'हर घर गुरुदेव इक्कतीसा' का जाप सम्पन्न

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com'

बेंगलूरु। शहर के जिनकुशलसूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में जिनदत्तकुशलसूरी जैन सेवा एवं संगीत मंडल द्वारा दादा गुरुदेव का अत्यन्त चमत्कारी इक्कतीसा का पाठ आयोजित किया गया। मंडल के अध्यक्ष अरविन्द कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि परमात्मा और गुरुभक्ति से हमारे समस्त पाप, ताप और संताप दूर होते हैं। मंडल के मंत्री ललित डाकलिया ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक माह के एक रविवार को संघ के सदस्यों के निवास पर गुरुदेव इकतीसा का पाठ और गुरु भक्ति का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है और इस माह का पाठ लक्ष्मी, श्रुति दीपक छाजेड़ के निवास पर आयोजित किया गया। संगीत मंडल के सनी रांका, रेखा लोढ़ा, पारस पारख, महावीर पारख, विकास कोचर, रिषभ बरडिया आदि सदस्यों ने परमात्मा और गुरुदेव के भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी।

भाजपा पूर्वी राजस्थान में सात में से कोई भी सीट हारी तो मंत्री पद छोड़ दूंगा : किरोड़ी मीणा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। लोकसभा चुनाव की मतगणना से पहले कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने सोमवार को कहा कि अगर भाजपा उनके अधीन पूर्वी राजस्थान की सात सीट में से कोई भी सीट हारती है तो वे मंत्री पद छोड़ देंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने उन्हें (पूर्वी राजस्थान में) सात सीट की सूची दी है, जिन पर उन्होंने कड़ी मेहनत की है। मीणा ने कहा कि बाड़मेर और चूरू समेत कुछ सीट पर संशय है और इसे स्वीकार करना होगा। उन्होंने दौसा में संवाददाताओं से बातचीत में कहा, बाड़मेर और चूरू जैसी कुछ सीट पर संशय है और इसे स्वीकार करना होगा। मीणा दौसा में लोगों को पानी पिलाते हुए पत्रकारों से बात कर रहे थे।

उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री के दौसा आने से पहले मैंने कहा था कि अगर (दौसा) सीट नहीं जीती तो मैं मंत्री पद छोड़ दूंगा। बाद में प्रधानमंत्री ने मुझसे अलग से बात की और मुझे सात सीट की सूची दी। मैंने 11 सीट पर कड़ी मेहनत की है और अगर पार्टी सात में से एक भी सीट हारती है तो मैं मंत्री पद छोड़ दूंगा और यहां पानी पिलाऊंगा।

कृषि, ग्रामीण विकास, आपदा प्रबंधन एवं राहत मंत्री मीणा ने दौसा, भरतपुर, धौलपुर, करौली, अलवर, टोंक-सवाईमाधोपुर और कोटा-बूंदी समेत पूर्वी राजस्थान की सीट पर चुनाव प्रचार किया था। वर्ष 2019 के आम चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने राज्य की सभी 25 सीट पर जीत हासिल की थी और 2014 में भाजपा ने सभी सीट जीती थीं। कांग्रेस पिछले दो लोकसभा चुनाव में एक भी सीट नहीं जीत सकी थी।

'इंडिया' गठबंधन को हार स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए, लोकतंत्र पर सवाल नहीं करना चाहिए : भाजपा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने मतगणना से पहले सोमवार को विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि 'इंडिया' गठबंधन और कांग्रेस को लोकतंत्र की गरिमा को 'कमतर करने' की बजाय लोकसभा चुनाव में मिलने वाली 'अपरिहार्य' हार को शालीनता से स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। भाजपा मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल मतगणना से पहले समाज में 'अशांति' पैदा करने के लिए देश की चुनाव प्रक्रिया पर 'आधारहीन' सवाल उठा रहे हैं।

उन्होंने कहा, हल्के फुल्के अंदाज में मैं उनसे कहूंगा कि पूरे देश को 'पप्पू' न समझें। भारत के लोगों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश मत कीजिए। लोग बुद्धिमान हैं और यह समझते हैं कि आप अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए इस तरह के आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा, चुनाव के नतीजों का इंतजार कीजिए। लोकतंत्र की गरिमा को ठेस पहुंचाने के बजाय हार को शालीनता से स्वीकार करने के लिए तैयार रहें।

एग्जिट पोल में अनुमान जताया गया है कि भाजपा नीत राजग लोकसभा चुनाव में बड़े बहुमत से जीत हासिल कर सकता है और प्रधानमंत्री मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में बने रहेंगे। कांग्रेस ने इन अनुमानों को 'फर्जी' करार दिया और कहा कि ये चुनाव में धांधली को 'जानबूझकर सही ठहराने का प्रयास' है और 'इंडिया' गठबंधन के कार्यकर्ताओं का मनोबल गिराने के लिए मोदी द्वारा खेला जा रहा 'मनोवैज्ञानिक खेल' का हिस्सा है।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने एग्जिट पोल को 'मोदी मीडिया पोल' बताया। कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी समेत विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने रविवार को निर्वाचन आयोग का दरवाजा खटखटाया और चार जून को मतगणना के दिन ईवीएम परिणाम घोषित करने से पहले डाक मतपत्रों की गिनती करने सहित सभी दिशानिर्देशों का पालन सुनिश्चित करने का अनुरोध किया।

त्रिवेदी ने आरोप लगाया, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। चुनाव होते रहते हैं और सरकारें आती और जाती रहती हैं। लेकिन लोकतंत्र की अखंडता और लोकतांत्रिक प्रणालियों पर सवाल नहीं उठाए जाने चाहिए। भाजपा नेता ने कहा कि कांग्रेस और 'इंडिया' गठबंधन के अन्य घटक दलों ने 'संतुलन खो दिया है'' और लोकसभा चुनावों में अपनी 'अपरिहार्य' हार को भांपकर वे चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठाने लगे हैं।

तेयुप बेंगलूरु द्वारा राजाजीनगर में आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का हुआ शुभारंभ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद बेंगलूरु द्वारा रविवार को सेवा के नूतन उपक्रम आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का शुभारंभ किया राजाजीनगर क्षेत्र में जैन संस्कार विधि से किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया एवं तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का उद्घाटन किया। संस्कारक जितेंद्र घोषल एवं विक्रम दुगड़ ने जैन संस्कार विधि का क्रम संपादित करवाया। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने उपस्थित राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रायोजक परिवार, मुख्य अतिथिआदि का स्वागत करते हुए परिषद द्वारा वर्ष भर में आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी सभी को प्रदान की। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने परिषद को शुभकामना देते हुए कलेक्शन सेंटर शुरू करने, महामंत्री अमित नाहटा ने हॉस्टल की ओर कदम बढ़ाने, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने दक्षिणांचल दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन करने एवं उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने शुभकामनाएं दी।

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स के प्रायोजक नाहर परिवार की ओर स मूलचंद नाहर, मुख्य अतिथि संजय बैद ने परिषद के मानव सेवा के कार्यक्रमों की सराहना करते हुए आगे भी परिषद के कार्यों में जुड़ने की भावना व्यक्त की। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के राष्ट्रीय प्रभारी सौरभ मुनोत ने उपस्थित जनों को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में अभातेयुप से सहमंत्री लक्की कोठारी, कोषाध्यक्ष नरेश सोनी, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, संभाग प्रमुख अमित दक सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि यह मेडिकल स्टोर तेयुप द्वारा संचालित किया जाएगा जिसमें रियायती दरों पर दवाइयां उपलब्ध करवाई जाएगी। संयोजक तरुण पटावरी एवं प्रवीण नाहर ने व्यवस्था संभाली। संचालन मंत्री रोहित कोठारी ने किया।

मायुम ने आश्रम के बच्चों को नेहरु तारामंडल का भ्रमण कराया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। स्थानीय मारवाड़ी युवा मंच स्टार्स के सदस्यों ने 'आनंद सबके लिए के' अभियान के तहत 'खिलते सितारे' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें स्नेह ज्योति आश्रम के बच्चों को नेहरु तारामंडल भ्रमण कराया गया।

इस भ्रमण में सर्वप्रथम बच्चों को स्काई थिएटर में तारामंडल शो अंग्रेजी माध्यम में दिखाया गया. शो के उपरान्त मायुम परिवार के सदस्यों ने परिवार के बच्चों और आश्रम के बच्चों को साथ में खेल खिलाकर समानता और एकता का परिचय एवं सन्देश दिया। इस कार्यक्रम में शाखा सलाहकार रविराम सिंघानिया, पूर्व अध्यक्ष ऋषभ सर्राफ, निवर्तमान अध्यक्ष संदीप चनानी सहित शाखा उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल, सचिव पंकज जैन, कार्यक्रम संयोजक दीपक बंसल, विक्की अग्रवाल, गौरव अग्रवाल, वरुण गुप्ता और कोषाध्यक्ष सुनील अग्रवाल ने व्यवस्थाओं में सहयोग दिया।

आरआर नगर में बच्चों के लिए संस्कार निर्माण शिविर आयोजित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के तेरापंथ सभा राजराजेश्वरीनगर स्थित सभा भवन में साध्वीश्री उदितयशाजी की निश्रा में 8 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के समुचित विकास हेतु संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने बच्चों का स्वागत किया। कार्यकाल का शुभारंभ नमस्कार मुद्रा के साथ हुआ। साध्वीश्री जी ने बच्चों के मस्तिष्क को सक्रिय बनाने के लिए प्रैक्टिकल प्रयोग करवाये। साध्वीश्री ने बच्चों को खाते समय टीवी नहीं देखना, दिन में पांच बार (खाते, सोते, उठते, बाहर आते-जाते वक्त पांच बार नवकार मंत्र का स्मरण करना, रात को 10 बजे के बाद 'नो फोन, नो टीवी' आदि अच्छे संकल्प कराएं। साध्वी संगीतश्रीजी ने तेरापंथ के 11 आचार्यों के जीवन पर आधारित रोचक गेम खिलवाए ओर उसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया। साध्वीश्री उदितयशाजी ने नमस्कार महामंत्र की कहानी रोचक तरीके से बताई। बच्चों ने भी बहुत उत्साह के साथ सभी साध्वियों को सुना।

विजयनगर एवं केंगेरी से भी अच्छी संख्या में बच्चों की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला संयोजिका प्रिया छाजेड़, केंगेरी की संयोजिका पूनम दक एवं विजयनगर से आई प्रशिक्षिकाओं ने अपने विचार रखे। उपाध्यक्ष सरोज बैद एवं सहसंयोजिका वंदना भंसाली ने तैयारी में श्रम नियोजित किया। मंत्री गुलाब बाँठिया ने धन्यवाद दिया।

म्यांमार में भारतीय दूतावास ने फर्जी नौकरी की पेशकश को लेकर आगाह किया

नई दिल्ली/भाषा। म्यांमार स्थित भारतीय दूतावास ने पड़ोसी देश में नौकरी की चाह रखने वाले भारतीय नागरिकों को सतर्क रहने की सलाह दी है ताकि वे फर्जी या गैर कानूनी नौकरी के झांसे में नहीं फसें।

दूतावास की ओर से जारी परामर्श में कहा गया कि अंतरराष्ट्रीय अपराध गिरोह म्यांमा-थाईलैंड की सीमा स्थित म्यावाड्डी इलाके में सक्रिय हैं। साथ ही भारतीयों से इलाके से नौकरी की आने वाली पेशकश को स्वीकार करने से पहले सतर्क रहने को कहा गया। दूतावास ने कहा, ''हम इस विषय पर अपनी सलाह का पालन करने के महत्व पर पुनः जोर देना चाहेंगे कि संबंधित भारतीय दूतावास से परामर्श किए बिना ऐसी किसी भी नौकरी की पेशकश स्वीकार न करें।'' इसमें कहा गया, ''हाल ही में म्यावाड्डी शहर के दक्षिण में फा लू क्षेत्र नये क्षेत्र के रूप में उभरा है, जहां अधिकांश भारतीय पीड़ितों को भारत के साथ-साथ मलेशिया, संयुक्त अरब अमीरात आदि देशों से भर्ती किए जाने के बाद थाईलैंड के रास्ते तस्करी के लिए लाया जाता है।''

जलभराव

गुवाहाटी में सोमवार को भारी बारिश के बाद जलजमाव वाली सड़क से गुजरते लोग।

संस्कार, संस्कृति व सभ्यता के पालन से ही सफलता संभव : आचार्य महेन्द्रसागरसूरी

पूना/दक्षिण भारत। शहर के चिंचवड़ स्थित आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ ट्रस्ट में प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री महेन्द्रसागरसूरीश्वरजी ने कहा कि जो व्यक्ति, समाज या देश अपने संस्कृति के अनुसार चलता है वह हमेशा उच्चाइयों पर पहुंचता है। हमारे देश ने अपनी भाषा, संस्कृति, सभ्यता से दूरी बना ली थी तो देश पिछड़ने लगा था पर एक बार फिर से हमारे देश ने संस्कार, संस्कृति व सभ्यता को अपना लिया और एक बार फिर हमारा देश प्रगति की राह पर अग्रसर हो गया है। जो धर्म की राह पर चलेगा उसके जीवन में सफलता अवश्य आएगी। धर्म प्रगति का मार्ग है।

Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company, 6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51 and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**,
(*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.
HEAD OFFICE : DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT, New Media Company, 6/4, Cantonment Station Road, Bangalore 560051. Editorial : 080-25363030 / 9945488003. For Advertisement : 9945488002 - email : news@dakshinbharat.com